www.ghoonghatkibagawat.com ghoonghatkibagawat37@gmail.com ghoonghatkibagawat.com

UP/HIN/1999/1282

घूँघट की बगावत

प्रत्येक रविवार को प्रकाशित हिन्दी (साप्ताहिक समाचार पत्र)

वर्ष : 23 | अंक : 02 | गोरखपुर | 09 जुलाई 2023 | पृष्ठ : 8 | मूल्यः 2/–



अब, लोकतंत्र का सही लाभ सही लोगों तक पहुंच रहाः पीएम



वारणसी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने वाराणसी में 12,110 करोड़ की 29 परियोजनाओं का उद्‌घाटन और शिलान्यास किया। इसके साथ ही उन्होंने च्ड स्वनिधि योजना के तहत तृतिय ऋण प्राप्त वेंडरों को प्रमाण पत्र दिए। मोदी ने मणिकर्णिका घाट और अन्य घाट के मॉडल का अवलोकन किया। इस दौरान मोदी ने अपने संबोधन में कहा कि सावन के महीने की शुरूआत हो, बाबा विश्वनाथ और मां गंगा का आशीर्वाद हो और बनारस के लोगों का साथ हो, फिर तो जीवन बिल्कुल धन्य हो जाता है। उन्होंने कहा कि आज पूरी दुनिया में आपकी और काशी की वाहवाही हो रही है। मुझे पता है कि काशी के लोग सब संभाल लेंगे। आप लोगों ने काशी विश्वनाथ धाम और पूरे परिसर को भी इतना भव्य बना दिया है कि जो यहां आ रहा है, वो गदगद होकर जा रहा है। यह बाबा की कृपा है।

मोदी ने कहा कि आज काशी सहित उत्तर प्रदेश को लगभग 12 हजार करोड़ रुपए की परियोजनाओं का उपहार मिला है। हमने जो काशी की आत्मा को बनाए रखते हुए नूतन काया का संकल्प लिया है, यह उसका विस्तार है। इनमें रेल, रोड, पानी, शिक्षा, टूरिज्म से जुड़े प्रोजेक्ट्स हैं, घाटों से जुड़े प्रोजेक्ट्स हैं, इन विकास कार्यों के लिए आप सभी को बहुत–बहुत बधाई। उन्होंने कहा कि बीते 9 वर्षों में हमने सिर्फ एक परिवार और एक पीढ़ी के लिए योजनाएं नहीं बनाई हैं, बल्कि आने वाली पीढ़ियों का भविष्य भी सुधर जाए, इसको ध्यान में रखकर काम किया है।

विपक्ष पर निशाना

विपक्ष पर निशाना साधते हुए मोदी ने कहा कि जिन दलों ने अतीत में भ्रष्ट और नाकाम सरकारें चलाईं, वे आज लाभार्थी का नाम सुनकर तिलमिला जाते हैं। उन्होंने कहा कि आजादी के इतने साल बाद लोकतंत्र का लाभ अब सही मायने में, सही लोगों तक पहुंचा है। वरना पहले लोकतंत्र के नाम पर गिने–चुने लोगों के हित साधे जाते थे, गरीबों की कोई पूछ नहीं थी। भाजपा सरकार में लाभार्थी वर्ग सच्चे सामाजिक न्याय और सच्चे सेक्युलरिज्म का उदाहरण बन गया है। उन्होंने कहा कि आज कमीशन लेने वालों की दुकान बंद, दलाली खाने वालों की दुकान बंद, घोटाले करने वालों की दुकान बंद...यानी अब ना ही कोई भेदभाव और ना ही कोई भ्रष्टाचार।

2014 से पहले भ्रष्टाचारियों की सरकारें

मोदी ने कहा कि पहले बैंक तक पहुंच भी सिर्फ अमीर लोगों तक ही होती थी। गरीबों के लिए तो ये माना जाता था कि पैसा ही नहीं है तो बैंक खाते का क्या करेंगे। बीते 9 वर्षों में इस सोच को भी भाजपा सरकार ने बदल दिया है। उन्होंने कहा कि यहां यूपी में भी करोड़ों लाभार्थियों ने मुद्रा योजना का लाभ उठाकर अपना काम शुरू किया है। इसमें सबसे अधिक लाभ गरीब, दलित, पिछड़े, आदिवासी और अल्पसंख्यक परिवार से जुड़े साथियों और महिला उद्यमियों को हुआ है।

यही तो सामाजिक न्याय है, जिसकी गारंटी भाजपा सरकार दे रही है। जिन लोगों ने देश पर दशकों तक राज किया, उनके शासन के मूल में भी बेइमानी रही है। जब ऐसा होता है तो चाहे कितना भी धन इकट्ठा हो तो कम ही पड़ता है। 2014 से पहले भ्रष्टाचारियों की ऐसी ही सरकारें चलती थी।

तेज विकास की यात्रा चलती रहेगी

प्रधानमंत्री ने कहा कि आज गरीब कल्याण हो या फिर इंफ्रास्ट्रक्चर, बजट की कोई कमी नहीं है। वही करदाता हैं, वही सिस्टम है।

सरकार बदली है, नीयत बदली है, तो परिणाम भी बदले दिख रहे हैं। उन्होंने कहा कि बीते 9 वर्षों में काशी की कनेक्टिविटी को भी बेहतर करने के लिए अभूतपूर्व काम हुआ है। यहां जो विकास कार्य हो रहे हैं, वो रोजगार के अनेकों नए अवसर भी बना रहे हैं। आपलोग ऐसे ही बनारस को संभाले रहिए, बाबा के आशीर्वाद से वाराणसी की तेज विकास की यात्रा चलती रहेगी।

प्रधानमंत्री ने किया योजनाओं का शिलान्यास, लोकार्पण

रायपुर। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने छत्तीसगढ़ में 7600 करोड़ के कई योजनाओं का लोकार्पण किया। प्रधानमंत्री ने रेल, सड़क, पेट्रोलियम से जुड़ी 10 परियोजनाओं का शुभारंभ किया। साइंस कॉलेज ग्राउंड के मंच से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने जनसभा को संबोधित किया। पीएम मोदी ने राज्य में चलाए जा रहे केंद्र सरकार की योजनाओं के बारे में जानकारी दी। इसके पहले केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी और छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने कार्यक्रम को संबोधित किया।



प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने जनसभा को संबोधित करते कहा 9 साल पहले छत्तीसगढ़ के 30 फीसदी गांवों से ज्यादा में मोबाइल कनेक्टिविटी नहीं थी अब यह 6 प्रतिशत रह गई है. रायपुर–धनबाद, रायपुर–विशाखापट्टनम इकोनामिक कारीडोर से यहां की विकास की नयी गाथा लिखी जाएगी। माइंस और मिनरल एक्ट बदले जाने के बाद छत्तीसगढ़ को अधिक पैसा मिला। सन 2014 में प्रदेश को 13 सौ करोड़ मिले थे, लेकिन 20–21 तक बढ़कर 2800 करोड़ रुपये रायल्टी मिलने लगी. डीएमएफ राशि बढ़ी तो जिलों का विकास बढ़ा।

उन्होंने कहा छग में 1 करोड़ 60 लाख से ज्यादा जनधन खाते खुले। इनमें गरीबों के 6 हजार करोड़ रुपए से ज्यादा जमा हैं। युवाओं को स्वरोजगार के लिए 40 हजार करोड़ रुपए से अधिक मदद दी गई है। कोरोना काल में छत्तीसगढ़ के 2 लाख उद्यमियों को 5 हजार करोड़ रुपए की मदद दी। 60 हजार से ज्यादा रेहड़ी–पटरी वालों को नगद मदद दी गई। मनरेगा में 25 हजार करोड़ रुपए की मदद दी।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा, आयुष्मान योजना के तहत छत्तीसगढ़ के 75 लाख लोगों को मदद की जा रही है। आयुष्मान कार्ड पूरे देश में कहीं भी मदद दिला सकता है। उन्होंने विश्वास दिलाया कि भारत सरकार छत्तीसगढ़ के हर व्यक्ति की मदद करती रहेगी।

राजस्थान के बीकानेर में आज कई परियोजनाओं के लोकार्पण और शिलान्यास का सौभाग्य प्राप्त होगा। इनमें अमृतसर–जामनगर ग्रीनफील्ड एक्सप्रेस–वे भी शामिल है। इससे जहां 4 राज्यों के लाखों लोगों का जीवन आसान होगा, वहीं विकास को भी एक नई ऊर्जा मिलेगी।



कर्नाटक के तटीय इलाकों में भारी बारिश, भूस्खलन से महिला की मौत



बेंगलुरु। कर्नाटक के दक्षिण कन्नड़ के तटीय जिले में शुक्रवार को भी भारी बारिश जारी रही, जिससे वहां के अलग–अलग हिस्सों में जनजीवन प्रभावित हुआ और वाहनों की आवाजाही भी बाधित रही, जबकि भूस्खलन की वजह से एक महिला की मौत हो गई। पुलिस ने बताया कि शुक्रवार तड़के दक्षिण कन्नड़ जिले के बंटवाल तालुक स्थित सजिपमुन्नूर गांव के नंदवारा में भारी बारिश के कारण एक पहाड़ी का एक हिस्सा एक घर पर गिर गया, जिससे एक महिला की मौत हो गई। उसने बताया कि महिला की पहचान मोहम्मद नामक व्यक्ति की पत्नी जरीना (47) के रूप में हुई। इससे पहले उनकी बेटी सफा (20) को अग्निशमन एवं बचाव विभाग के कर्मियों और पुलिस ने मलबे से निकाल लिया था।

सूत्रों ने बताया कि जरीना का शव मलबे से काफी देर बाद निकाला जा सका, जबकि सफा को अस्पताल में भर्ती कराया गया। दक्षिण कन्नड़ के उपायुक्त (डीसी) मुलई मुगिलन ने कहा कि ज़रीना के परिवार को पांच लाख रुपये का मुआवाज़ा दिया जाएगा जबकि परिवार को घर की मरम्मत कराने के लिए भी 1.2 लाख रुपये अलग से दिए जाएंगे। उपायुक्त ने घटनास्थल का दौरा किया है। उन्होंने तालुक अधिकारियों को ऐसे हादसों को रोकने के लिए पर्याप्त एहतियाती उपाय करने का निर्देश दिया है। तालुक में भारी बारिश की वजह से कई इलाकों में काफी नुकसान हुआ है। जिला आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के सूत्रों ने बताया कि बारिश से प्रभावित 53 लोगों को सुरक्षित जगहों पर पहुंचाया गया है और मुल्की तालुक में दो तथा मंगलुरु एवं बंटवाल तालुकों में एक–एक राहत शिविर खोले गए हैं। सूत्रों ने यह भी बताया कि बृहस्पतिवार को चेल्याडका में एक पुल के पूरी तरह से पानी में डूब जाने के बाद जिले में पुत्तूर–पनाजे मार्ग पर वाहनों की आवाजाही अवरुद्ध हो गई। सूत्रों के मुताबिक, कुक्के सुब्रमण्यम में कुमारधारा नदी लगभग उफान पर है और मंदिर के पास स्थित स्नान घाट लगभग जलमग्न हो गया है। जिले के विभिन्न हिस्सों से प्राप्त खबरों में कहा गया है कि पिछले दो दिनों में हुई भारी बारिश से 29 घर क्षतिग्रस्त हुए हैं। सूत्रों ने बताया कि विभिन्न स्थानों पर बिजली के खंभे और लाइन भी नष्ट हो गई हैं। मौसम विभाग ने दक्षिण कन्नड़, उडुपी और उत्तर कन्नड़ के तटीय क्षेत्रों के वास्ते शनिवार के लिए ऑरेंज अलर्ट जारी किया है। वहीं, दक्षिण कन्नड़ और उडुपी के जिला प्रशासन ने शुक्रवार को शैक्षणिक संस्थानों में छुट्टी की घोषणा की।

वंदे भारत एक्सप्रेस को हरी झंडी, पुनर्विकास परियोजना का भी किया शिलान्यास

गोरखपुर। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शुक्रवार अपराह्न राज्यपाल श्रीमती आनंदी बेन पटेल व मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की उपस्थिति में गोरखपुर को रफ्तार और विकास की सौगात दी। पीएम ने गोरखपुर से वाया अयोध्या, लखनऊ तक चलने वाली सेमी हाई स्पीड ट्रेन वंदे भारत को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। साथ ही गोरखपुर रेलवे स्टेशन के कायाकल्प वाली पुनर्विकास परियोजना का भी शिलान्यास किया। गोरखपुर रेलवे स्टेशन पर आयोजित समारोह से ही पीएम मोदी ने जोधपुर–अहमदाबाद (साबरमती) वंदे भारत एक्सप्रेस का शुभारंभ किया।

गीता प्रेस के शताब्दी वर्ष के समापन समारोह में सम्मिलित होने के बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी गोरखपुर रेलवे स्टेशन पहुंचे। प्लेटफार्म नंबर एक पर आने के साथ ही वहां यहां खड़ी वंदे भारत की एक बोगी में गए। उपलब्ध सुविधाओं को देखा। बोगी में पहले से बैठे बच्चों से संवाद किया। क्रू मेंबर्स को शुभकामनाएं दीं। इंजन का जायजा लेने के बाद वह ट्रेन से उतरे।

प्रधानमंत्री ने प्लेटफॉर्म नम्बर एक पर रखे गोरखपुर जंक्शन स्टेशन पुनर्विकास परियोजना का मॉडल का अवलोकन करने के बाद रिमोट का बटन दबाकर इस परियोजना का शिलान्यास किया। इसके बाद उन्होंने जोधपुर–अहमदाबाद वंदे भारत का वर्चुअल शुभारंभ किया। तत्पश्चात प्रधानमंत्री ने राज्यपाल आनंदी बेन पटेल और मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की उपस्थिति में गोरखपुर–लखनऊ वंदे भारत एक्सप्रेस को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। इस अवसर पर सांसद रविकिशन शुक्ल, चेयरमैन रेलवे बोर्ड अनिल लोहाटी, पूर्वोत्तर रेलवे के महाप्रबंधक चंद्रवीर रमण आदि भी प्रमुख रूप से मौजूद रहे।

सुगम यात्रा के साथ पर्यटन को मिलेगा बढ़ावा

गोरखपुर से वाया अयोध्या, लखनऊ तक वंदे भारत एक्सप्रेस के संचलन से गुरु गोरखनाथ की तपोभूमि, भगवान श्रीराम की जन्मस्थली और प्रदेश की राजधानी तक लोगों को न केवल आवागमन सुगमता मिलेगी बल्कि इससे पर्यटन को भी बढ़ावा मिलेगा। यह ट्रेन सांस्कृतिक, औद्योगिक और आर्थिक विकास की गति बढ़ाने में भी सहायक होगी। वंदे भारत एक्सप्रेस गोरखपुर से लखनऊ के बीच चलने वाली सबसे तीव्र गति की ट्रेन होगी और इससे दोनों दूरी तय करने में करीब दो घंटे समय की बचत होगी। अत्याधुनिक सुविधाओं के चलते वंदे भारत की यात्रा हवाई जहाज की यात्रा का एहसास कराएगी। सुविधाओं की बात करें तो पूर्णतः वातानुकूलित इस ट्रेन में खानपान, आरामदायक व 360 डिग्री पर घूमने वाली सीट, टच फ्री शौचालय सुविधा, सेंसरयुक्त दरवाजे, वाईफाई के अलावा दिव्यांगजन के अनुकूल शौचालय व ब्रेल लिपि में सीट नम्बर अंकन की भी व्यवस्था है।

गोरखपुर जंक्शन रेलवे स्टेशन पुनर्विकास परियोजना स्टेशन को सिटी सेंटर के रूप में विकसित करेगी। अत्याधुनिकता के साथ स्टेशन स्थानीय विरासत प्रतीकों का भी प्रतिनिधि होगा। नए स्टेशन भवन में गोरखनाथ मंदिर और गीता प्रेस की झलक भी दिखेगी। इसमें मल्टी फंक्शनल कॉम्प्लेक्स का प्रावधान किया गया है। पुनर्विकास परियोजना में स्टेशन पर अत्याधुनिक सुविधाओं वाले रूफ प्लाजा, फूड आउटलेट, प्रतीक्षालय, एटीएम और बच्चों के लिए प्लेइंग एरिया का भी इंतजाम होगा। आधुनिक ग्रीन बिल्डिंग के कांसेप्ट में इसका निर्माण होगा और इसमें वाटर ट्रीटमेंट प्लांट, सॉलिड वेस्ट मैनेजमेंट की भी व्यवस्था की जाएगी।



पीएम मोदी के हाथों गोरखपुर को मिली रफ्तार

- रेलवे स्टेशन के पुनर्विकास परियोजना का भी पीएम मोदी ने किया शिलान्यास।

गोरखपुर। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शुक्रवार दोपहर राज्यपाल आनंदी बेन पटेल व मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की उपस्थिति में गोरखपुर को रफ्तार और विकास की सौगात दी। पीएम ने गोरखपुर से वाया अयोध्या, लखनऊ तक चलने वाली सेमी हाई स्पीड ट्रेन वंदे भारत को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। साथ ही गोरखपुर रेलवे स्टेशन के कायाकल्प वाली पुनर्विकास परियोजना का भी शिलान्यास किया। गोरखपुर रेलवे स्टेशन पर आयोजित समारोह से ही पीएम मोदी ने जोधपुर–अहमदाबाद (साबरमती) वंदे भारत एक्सप्रेस का शुभारंभ किया।



चलती ट्रेन में लगी आग, फलकनुमा एक्सप्रेस की तीन बोगियां खाक, यात्रियों में मची अफरातफरी



घटना शुक्रवार सुबह करीब 11:30 बजे

हैदराबाद। मुख्यालय से करीब 50 किलोमीटर दूर बोम्मईपल्ली में पगड़ीपल्ली रेलवे स्टेशन के पास हुई। रेलवे अधिकारियों ने कहा कि किसी भी यात्री को चोट नहीं आई है, लेकिन आग लगने का कारण अभी तक पता नहीं लग पाया है। शुक्रवार सुबह तेलंगाना के नलगोंडा के पास सिकंदराबाद-हावड़ा फलकनुमा एक्सप्रेस के तीन डिब्बों में आग लग गई। हालांकि, अभी तक किसी के हताहत होने की खबर नहीं है। जानकारी के मुताबिक घटना शुक्रवार सुबह करीब 11:30 बजे हैदराबाद से करीब 50 किलोमीटर दूर बोम्मईपल्ली में पगड़ीपल्ली रेलवे स्टेशन के पास हुई। रेलवे अधिकारियों ने कहा कि किसी भी यात्री को चोट नहीं आई है, लेकिन आग लगने का कारण अभी तक पता नहीं लग पाया है। हालांकि, यात्रियों में अफरातफरी मच गई थी।

तीन डिब्बों में भयानक आग

जानकारी मे बताया गया है कि तीन डिब्बों, एस 4, एस 5 और एस 6 में आग लग गई और सभी यात्रियों को तुरंत ट्रेन से उतार दिया गया। अधिकारियों ने कहा कि वैकल्पिक व्यवस्था की जा रही है। रेलवे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी ने कहा, "आग बुझने के बाद ट्रेनों को रद्द करने और वैकल्पिक मार्गों पर विचार किया जाएगा। हम बाद में सूचित करेंगे।" दक्षिण मध्य रेलवे के एक वरिष्ठ अधिकारी ने कहा कि आग से दो डिब्बे पूरी तरह क्षतिग्रस्त हो गए और एक आंशिक रूप से क्षतिग्रस्त हो गया। हालांकि, बड़ा सवाल बना हुआ है कि आखिर यह आग कैसे लगी है। एक प्रत्यक्षदर्शी ने बताया कि आग लगने का पता चलने के बाद सभी यात्री उतर गए थे। एससीआर के एक अधिकारी ने बताया कि स्थिति पूरी तरह नियंत्रण में है।

?कोई चोट नहीं, कोई हताहत नहीं। सभी यात्री सुरक्षित हैं। कुछ दिन पहले समस्तीपुर-बरौनी रेल खंड के दलसिंहसराय और नाजिरगंज रेलवे स्टेशन के बीच गरीब रथ एक्सप्रेस ट्रेन के जेड-3 बोगी में आग लग गई थी। आग की सूचना के साथ ही यात्रियों में हड़कंप मच गया था। हालांकि यात्रियों और ग्रामीणों की समस्त आरी से आग पर काबू पाया गया था।



सदन की कार्यवाही बाधित करने पर पांच विधायक निलंबित

नई दिल्ली। सदन की कार्यवाही में 'बाधा' डालने के आरोप में शुक्रवार को त्रिपुरा विधानसभा से पांच विधायकों को निलंबित कर दिया गया। अधिकारियों ने बताया कि इसके बाद विपक्ष ने सदन से बहिर्गमन किया। बताया गया कि आज विधानसभा सत्र के दौरान बीजेपी और टिपरा मोथा पार्टी के विधायकों के बीच हंगामा हो गया। विपक्षी दल के नेता अनिमेष देबबर्मा ने त्रिपुरा बागबासा विधानसभा के भाजपा विधायक जादव लक नाथ द्वारा पोर्न फिल्म देखने के मुद्दे पर सवाल उठाया। नाथ को इस साल मार्च में पिछले विधानसभा सत्र के दौरान कथित तौर पर अश्लील वीडियो देखते हुए पकड़ा गया था।

जमकर हुआ हंगामा

सदन के अध्यक्ष ने कुछ अन्य महत्वपूर्ण मुद्दों के बाद उनसे बात करने की बात कही, लेकिन विपक्षी दलों के विधायकों ने हंगामा और नारेबाजी शुरू कर दी। सदन से हंगामा करने वाले पांच विधायकों को निलंबित कर दिया गया। इसका अक वीडियो भी सामने आया है। इस वीडियो में एक व्यक्ति मेज पर चढ़कर नारेबाजी करते हुए दिखाई दे रहा है। विपक्षी नेता सभी 27 विपक्षी विधायकों के साथ सदन के वेल में आ गए।

उन्होंने नाथ के खिलाफ कार्रवाई की मांग करते हुए नारे लगाए और 40 मिनट तक इसे जारी रखा। विरोध से व्यथित होकर मुख्यमंत्री डॉ. माणिक साहा ने विधानसभा अध्यक्ष से बजट सत्र के दौरान सदन की मर्यादा को भंग करने और उसे कमजोर करने के लिए पांच विपक्षी विधायकों को सत्र से निलंबित करने का अनुरोध किया।

विपक्ष का बहिर्गमन

विधानसभा अध्यक्ष विश्वबंध सेन ने सदन में "गड़बड़ी पैदा करने" के लिए सीपीआई (एम) विधायक नयन सरकार, कांग्रेस के सुदीप रॉय बर्मन और तीन टिपरा मोथा विधायकों को दिन भर के लिए निलंबित कर दिया। टिपरा मोथा के तीन निलंबित विधायक बृस्वकेतु देबबर्मा, नंदिता रियांग और रंजीत देबबर्मा हैं। फैसले का विरोध करते हुए, कांग्रेस के दो विधायकों को छोड़कर पूरा विपक्ष सदन से बाहर चला गया, जो बाद में तब सदन से चले गए जब स्पीकर ने अपना फैसला वापस लेने से इनकार कर दिया।



फ्री बस टिकट के लिए हिंदू शख्स ने पहना बुर्का



धारवाड़। गुरुवार को कर्नाटक के धारवाड़ जिले में एक बस स्टॉप पर बुर्का पहने एक हिंदू व्यक्ति को देखा गया। दर्शकों को संदेह था कि वीरभद्रैया मठपति नामक व्यक्ति ने कर्नाटक सरकार की शक्ति योजना के तहत मुफ्त बस टिकट पाने के लिए बुर्का पहना था।

कर्नाटक में मुफ्त बस सीट पाने के लिए हिंदू व्यक्ति ने बुर्का पहना

वीरभद्रैया बस स्टॉप पर अकेले बैठे थे तभी दर्शकों की नजर उन पर पड़ी और उन्हें शक होने लगा। उसने दावा किया कि उसने भीख मांगने के लिए बुर्का पहना था। हालाँकि, उनका स्पष्टीकरण उन लोगों को संतुष्ट करने में विफल रहा, जिन्हें संदेह था कि उनकी शक्ति योजना के तहत मुफ्त बस टिकट प्राप्त करने की योजना थी।वीरभद्रैया के पास एक महिला के आधार कार्ड की फोटोकॉपी भी थी। महिलाओं के लिए मुफ्त बस सेवा प्रदान करना कर्नाटक में विधानसभा चुनाव से पहले कांग्रेस द्वारा किए गए पांच चुनावी वादों में से एक था। शक्ति योजना कर्नाटक में कांग्रेस के 5 चुनावी वादों में से एक है। विधानसभा चुनाव के पहले कांग्रेस ने राज्य में महिलाओं के लिए मुफ्त बस सेवा शुरू करने की बात कही थी। इसे सरकार बनाने के बाद लागू कर दिया गया है।

संजय राउत कर रहे शिंदे सेना में फूट का दावा

नीलम गोरे हुईं शिवेसना में शामिल

मुंबई। शिवसेना (यूबीटी) पार्टी की पूर्व नेता और विधान परिषद सदस्य (एमएलसी) नीलम गोरे शुक्रवार को मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे और उप-मुख्यमंत्री देवेंद्र फड़णवीस की उपस्थिति में शिवसेना में शामिल हो गईं। महाराष्ट्र विधान परिषद के उपाध्यक्ष गोरे, मनीषा कायंदे और विप्लव बजारिया के बाद पाला बदलने वाले शिवसेना (यूबीटी) के तीसरे एमएलसी बन गई हैं। आज महाराष्ट्र विधान परिषद की बिजनेस एडवाइजरी बैठक में बीजेपी नेता प्रवीण दरेकर ने उपाध्यक्ष नीलम गोरे के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव वापस लेने का प्रस्ताव रखा। प्रस्ताव का समर्थन भाजपा के प्रसाद लाड ने किया।

यह खबर ऐसे दिन आई है जब शिवसेना (यूबीटी) सांसद संजय राउत ने कहा कि एकनाथ शिंदे गुट के करीब 17-18 विधायक उनके संपर्क में है। राउत ने कहा कि हम यह नहीं कह रहे हैं कि वे हमारे पास आ रहे हैं, लेकिन पिछले सप्ताह से उन्होंने अपनी नाराजगी व्यक्त करते हुए हमसे संपर्क किया है। अब भी चार विधायकों ने मुझे फोन किया. अठारह विधायकों ने संपर्क किया है. ऐसा नहीं है कि वे हमारे साथ शामिल हो गए हैं, निर्णय केवल उद्धव ठाकरे ही ले सकते हैं। महाराष्ट्र के उद्योग मंत्री उदय सामंत ने राउत के दावों को खारिज करते हुए कहा कि छह से सात शिवसेना (यूबीटी) विधायक उनके संपर्क में थे और पाला बदलना चाहते थे। शिवसेना विधायक संजय शिरसाट ने कहा कि किसी को संजय राउत को गंभीरता से नहीं लेना चाहिए। वह और विनायक राऊत फर्जी खबरें और अफवाहें फैलाने में माहिर हैं। यदि कोई विधायक आपके संपर्क में है, तो कम से कम एक नाम बताएं।

'राहुल की लड़ाई अहंकारी शासन के खिलाफ':प्रियंका गांधी

- सच को दबाने के लिए हर हथकंडे आजमा रही है

नई दिल्ली। गुजरात उच्च न्यायालय द्वारा उनके भाई की याचिका खारिज किए जाने के बाद कांग्रेस नेता प्रियंका गांधी वाड्रा ने शुक्रवार को कहा कि राहुल गांधी एक "अहंकारी शासन" के खिलाफ सच्चाई और लोगों के हितों की लड़ाई लड़ रहे हैं, जो उनके द्वारा उठाए गए सवालों को दबाने के लिए सभी हथकंडे अपना रही है। आपराधिक मानहानि मामले में उनकी दोषसिद्धि पर रोक लगाने की मांग की गई है। याचिका को खारिज करते हुए, न्यायमूर्ति हेमंत प्रच्छक ने कहा कि गांधी पहले से ही भारत भर में 10 आपराधिक मामलों का सामना कर रहे थे। उन्होंने कहा कि गांधी को उनके मोदी उपनाम टिप्पणी के लिए दो साल की जेल की सजा देने का निचली अदालत का आदेश "उचित,और कानूनी" था।

प्रियंका ने क्या कहा

हिंदी में एक लंबे ट्विटर पोस्ट में, प्रियंका गांधी ने रामधारी सिंह 'दिनकर' की कविता "समर शेष है...(लड़ाई अभी बाकी है)" उद्धृत की और मोदी सरकार पर तीखा हमला बोला। उन्होंने कहा कि राहुल गांधी इस अहंकारी सत्ता के सामने सत्य और जनता के हितों की लड़ाई लड़ रहे हैं। अहंकारी सत्ता चाहती है कि जनता के हितों के सवाल न उठें, अहंकारी सत्ता चाहती है कि देश के लोगों की जिंदगियों को बेहतर बनाने वाले सवाल न उठें, अहंकारी सत्ता चाहती है कि उनसे महंगाई पर सवाल न पूछे जाएं, युवाओं के रोजगार पर कोई बात न हो, किसानों की भलाई की आवाज न उठे, महिला. ओं के हक की बात न हो, श्रमिकों के सम्मान के सवाल को न उठाया जाए।



सच को दबाने की हो रही कोशिश

कांग्रेस नेता ने कहा कि अहंकारी सत्ता सच को दबाने के लिए हर हथकंडे आजमा रही है, जनता के हितों से जुड़े सवालों से भटकाने के लिए साम, दाम, दंड, भेद, छल, कपटः सब अपना रही है। लेकिन, सत्य, सत्याग्रह, जनता की ताकत के सामने न तो सत्ता का अहंकार ज्यादा दिन टिकेगा और न ही सच्चाई पर झूठ का परदा। राहुल गांधी जी ने इस अहंकारी सत्ता के सामने जनता के हितों से जुड़े सवालों की ज्योति जलाकर रखी है। उन्होंने कहा कि इसके लिए वे हर कीमत चुकाने को तैयार हैं और तमाम हमलों व अहंकारी भाजपा सरकार के हथकंडों के बावजूद एक सच्चे देशप्रेमी की तरह जनता से जुड़े सवालों को उठाने से पीछे नहीं हटे हैं। जनता का दर्द बांटने के कर्तव्य पथ पर डटे हुए हैं। सत्य की जीत होगी। जनता की आवाज जीतेगी।



महाराष्ट्र के दौरे पर राष्ट्रपति द्रौपदी मुरमू ने शुक्रवार नागपुर की राजभवन में महाराष्ट्र के विशेष रूप से कमजोर जनजाति समूहों के साथ विभिन्न मुद्दों पर वार्ता की, साथ ही साथ यहां आयोजित एक प्रदर्शनी का अवलोकन किया । इसके बाद राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू मुंबई पहुंचीं जहां उनके प्रथम आगमन पर महाराष्ट्र के राज्यपाल रमेश वैश्य मुख्यमंत्री एकनाथ शिन्दे और उप मुख्यमंत्री देवेन्द्र फडनवीस ने उन्हें पुष्पगुच्छ प्रदान कर उनका स्वागत किया। इस अवसर पर राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू को गार्ड आफ आनर भी दिया गया।

गीता प्रेस एक संस्था नहीं, जीवंत आस्था : नरेन्द्र मोदी

गोरखपुर। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने आज गोरखपुर का दौरा किया और गीता प्रेस गोरखपुर के शताब्दी समारोह के समापन समारोह में भाग लिया। इस दौरान प्रधानमंत्री ने कहा कि इस बार का मेरा गोरखपुर का दौरा विकास भी–विरासत भी की नीति का अद्भुत उदाहरण है। उन्होंने कहा कि गीता प्रेस के इस कार्यक्रम के बाद मैं गोरखपुर रेलवे स्टेशन जाऊंगा। आज से ही गोरखपुर रेलवे स्टेशन के आधुनिकीकरण का काम भी शुरू होने जा रहा है। उन्होंने कहा कि वंदे भारत ट्रेन ने देश के मध्यम वर्ग को सुविधा और सहुलियत की एक नई उड़ान दी है। आज देश के कोने–कोने से नेता मुझे चिठ्ठियां लिखकर कहते हैं कि हमारे क्षेत्र से भी वंदे भारत ट्रेन चलाइए। ये वंदे भारत का क्रेज है।

गीता प्रेस एक जीवंत आस्था

मोदी ने कहा कि गीता प्रेस विश्व का ऐसा एकलौता प्रिंटिंग प्रेस है, जो सिर्फ एक संस्था नहीं बल्कि एक जीवंत आस्था है। गीता प्रेस का कार्यालय करोड़ों लोगों के लिए किसी मंदिर से जरा भी कम नहीं है। इसके नाम और काम में भी गीता है। जहां गीता है वहां साक्षात् कृष्ण भी है। उन्होंने कहा कि हमारी सरकार ने गीता प्रेस को गांधी शांति पुरुस्कार भी दिया है। गांधी जी का गीता प्रेस से भावनात्मक जुड़ाव था। एक समय में गांधी जी कल्याण पत्रिका के माध्यम से गीता प्रेस के लिए लिखा करते थे। मुझे बताया गया कि गांधी जी ने ही सुझाव दिया था कि कल्याण पत्रिका में विज्ञापन न छापे जाएं। कल्याण पत्रिका आज भी गांधी जी के सुझाव का शत प्रतिशत अनुसरण कर रही है।

एक भारत–श्रेष्ठ भारत की भावना

मोदी ने कहा कि इसके नाम में भी और काम में भी गीता है और जहां गीता है वहां साक्षात कृष्ण है। जहां कृष्ण है वहां करुणा भी है, कर्म भी है। वहां ज्ञान का बोध भी है और विज्ञान का शोध भी है। उन्होंने कहा कि 1923 से गीता प्रेस की लौ मानव जाति का पथ आलोकित कर रही है। इस मानवीय मिशन के शताब्दी समारोह का गवाह बनना हमारे लिए बड़े सम्मान की बात है। मोदी ने कहा कि गीता प्रेस जैसी संस्था सिर्फ धर्म और कर्म से ही नहीं जुड़ी है बल्कि इसका एक राष्ट्रीय चरित्र भी है। गीता प्रेस भारत को जोड़ती है, भारत की एकजुटता को सशक्त करती है। गीता प्रेस अलग–अलग भाषाओं में भारत के मूल चिंतन को जन–जन तक पहुंचाती है। गीता प्रेस एक तरह से 'एक भारत–श्रेष्ठ भारत' की भावना का प्रतिनिधित्व करती है।

प्रधानमंत्री ने कहा कि ये समय गुलामी की मानसिकता से मुक्त होकर अपनी विरासत पर गर्व करने का है। आज एक ओर भारत डिजिटल टेक्नोलॉजी में नए रिकॉर्ड बना रहा है। तो साथ ही, सदियों बाद काशी में विश्वनाथ धाम का दिव्य स्वरूप भी देश के सामने प्रकट हुआ है।

गांधी जी के सुझावों का शत प्रतिशत अनुसरण कर रही गीता प्रेस

प्रधानमंत्री ने कहा कि यह सौभाग्य है कि हम सभी इस मानवीय मिशन की शताब्दी के साक्षी बन रहे हैं। इस ऐतिहासिक अवसर पर ही हमारी सरकार ने गीता प्रेस को गांधी शांति पुरस्कार भी दिया है। गांधी जी का गीता प्रेस से भावानात्मक जुड़ाव था। एक समय में गांधी जी कल्याण पत्रिका के माध्यम से गीता प्रेस के लिये लिखा करते थे। और, गांधी जी ने सुझाव दिया था कि कल्याण पत्रिका में विज्ञापन न छापे जाएं। संस्था गांधी जी के उस सुझाव का शत प्रतिशत अनुसरण कर रही है। आज जो पुरस्कार गीता प्रेस को मिला है वह देश की ओर से गीता प्रेस, इसके योगदान और इसके 100 वर्षो की विरासत का सम्मान है।

लोगों को हैरान कर सकती है गीता प्रेस से प्रकाशित पुस्तकों की संख्या

पीएम मोदी ने कहा कि 100 वर्षो में गीता प्रेस के द्वारा करोड़ों किताबें प्रकाशित हो चुकी हैं। यह संख्या किसी को भी हैरान कर सकती है। यहां प्रकाशित पुस्तकें लागत से भी कम मूल्य पर बिकती हैं तथा घर घर पहुचांई जाती हैं। इस विद्या प्रवाह में कितने लोगों को आध्यात्मिक व वौद्धिक तृप्ति होती होगी, इसने समाज के लिये कितने ही समर्पित नागरिको का निर्माण किया होगा।

गीता प्रेस का राष्ट्रीय चरित्र भी

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि गीता प्रेस जैसी संस्था सिर्फ धर्म व कर्म से ही नहीं जुड़ी है बल्कि इसका एक राष्ट्रीय चरित्र भी है। गीता प्रेस भारत को जोड़ती है। भारत की एकजुटता को सशक्त करती है। देश भर में इसकी 20 शाखाएं हैं। देश के हर कोने में रेलवे स्टेशनों पर गीता प्रेस का स्टाल देखने को मिलता है। 15 अलग अलग भाषाओं में यहां से करीब 1600 प्रकाशन होते हैं।

एक भारत, श्रेष्ठ भारत की भावना का प्रतिनिधित्व

प्रधानमंत्री ने कहा कि गीता प्रेस अलग अलग भाषाओं में भारत के मूल चितंन को जन जन तक पहुंचाती है। गीता एक तरह से एक भारत श्रेष्ठ भारत की भावना को प्रतिनिधित्व देती है। गीता प्रेस ने अपने 100 वर्षो की यह यात्रा एक ऐसे समय में पूरी की है जब देश अपनी आजादी का 75वां वर्ष मना रहा है। इस तरह के योग केवल संयोग नही होते। 1947 के पहले भारत में निरंतर अपने पुनर्जागरण के लिये अलग अलग क्षेत्रों में प्रयास किये। अलग अलग संस्थाओं ने भारत की आत्मा को जगाने के लिये आकार लिया। इसी का परिणाम है था कि 1947 आते आते भारत मन और मानस से गुलामी की बेड़ियों को तोड़ने के लिये पूरी तरह तैयार हुआ। गीता प्रेस की स्थापना भी उसका एक बहुत बड़ा आधार बना।

हर संकट से उबरने को भगवतगीता से मिलता है विश्वास

100 साल पहले का ऐसा समय जब सदियों की गुलामी ने भारत की चेतना को धूमिल कर दिया। इससे भी सैकड़ों साल पहले विदेशी आक्रांताओं ने हमारे पुस्तकालयों को जलाया था। अंग्रेजों के दौर में गुरुकुल और गुरु परम्परा लगभग नष्ट कर दी गयी थी। ऐसे में स्वाभाविक था कि ज्ञान और विरासत लुप्त होने की कगार पर थी। हमारे पूज्य ग्रंथ गायब होने लगे थे। उस समय जो प्रिन्टिस प्रेस थे, वे महंगी कीमत के कराण सामान्य मानवीय पहुंच से बहुत दूर थे। गीता और रामायण के बिना हमारा समाज कैसे चल रहा होगा। जब मूल्यों और आदर्शों के स्रोत सूखने लगे तो समाज का प्रवाह अपने आप थमने लगता है। उन्होंने कहा कि भारत मे कितने बार अधर्म और आतंक बलवान हुआ। सत्य पर संकट के बादल मंडराए। लेकिन हर संकट में भगवतगीता से सबसे बड़ा विश्वास मिलता है। यदा यदा ही धर्मस्य का उद्धरण देते हुए पीएम मोदी ने कहा कि जब जब सत्य व धर्म पर संकट आता है तब तब ईश्वर उसकी रक्षा के लिए प्रकट होते हैं।

धरोहरों व भारतीय विचारों की हो रही पुनर्प्रतिष्ठा

प्रधानमंत्री ने कहा कि हम आजादी के 75वें साल में भी नौसेना के झण्डे पर गुलामी के प्रतीक चिन्ह को ढो रहे थे। राजधानी दिल्ली में भारतीय संसद के बगल में अंग्रेजी परम्परा कायम थी। हमने पूरे विश्वास के साथ इन्हे बदलने का कार्य किया। धरोहरों को और भारतीय विचारों की पुनर्प्रतिष्ठा हो रही है। उन्हें वह स्थान दिया जा रहा है जो उन्हें मिलना चाहिए। अब भारतीय नौसेना के झण्डे पर छात्रपति शिवाजी महराज के समय का निशान दिखाई दे रहा है। अब गुलामी की दौर का राजपथ कर्तव्यपथ बनकर कर्तव्य भाव की प्रेरणा दे रहा है। आज देश की जन जातीय परम्परा का सम्मान करने के लिए देश भर में जन जातीय स्वतंत्रता सेनानी म्यूजियम बनाये जा रहे हैं। हमारी जो पवित्र प्राचीन मूर्तियां चोरी कर के देश के बाहर भेज दी गयी थीं, वह भी अब वापस हमारे देश में आ रही हैं।

मनीषियों की आध्यात्मिक ज्ञान ऊर्जा से नए भारत का निर्माण

पीएम मोदी ने कहा कि जो विकसित और आध्यात्मिक विचार हमारे मनीषियों ने दिया है, आज हम उसे सार्थक होता हुआ देख रहे हैं। विश्वास है कि संतो, ऋषियों, मुनियों की आध्यात्मिक साधना भारत के सर्वांगीण विकास को उर्जा देती रहेगी। इस ऊर्जा से एक नये भारत का निर्माण होगा और विश्व कल्याण की भावनाएं सबल होंगी।

वंदे भारत मध्यम वर्ग की सुविधा के लिए नई उड़ान

इस अवसर पर पीएम मोदी ने वंदे भारत शुभारंभ व गोरखपुर रेलवे स्टेशन रिमॉडलिंग प्रोजेक्ट शिलान्यास का भी उल्लेख किया। कहा कि आज ही गोरखपुर रेलवे स्टेशन के आधुनिकीकरण का कार्य भी शुरू होने जा रहा है। उसी कार्यक्रम में गोरखपुर से लखनऊ के लिये वंदे भारत ट्रेन को हरी झंडी दिखाकर और उसी समय जोधपुर से अहमदाबाद के बीच चलने वाली वंदे भारत एक्सप्रेस को भी रवाना किया जायेगा। वंदे भारत ट्रेन ने देश के मध्यम वर्ग के लोगों की सुविधाओं के लिये एक नई उड़ान दी है।

लीलाचित्र मंदिर देख अभिभूत हुए पीएम मोदी

गीता प्रेस न केवल धार्मिक–आध्यात्मिक पुस्तकों के प्रकाशन की विश्व प्रतिष्ठित संस्था है बल्कि इसकी ख्याति इसके अनूठे लीलाचित्र मंदिर के लिए भी है। गीता प्रेस आगमन पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सर्वप्रथम राज्यपाल श्रीमती आनंदी बेन पटेल व मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के साथ लीलाचित्र मंदिर का अवलोकन किया। इसे देख प्रसन्नता के भाव मे वह अभिभूत नजर



आए। लीलाचित्र मंदिर की दीवारों पर श्रीमद्भागवत गीता के 18 अध्यायों के श्लोक संगमरमर पर लिखे हुए हैं। साथ ही देवी–देवताओं के सैकडों चित्र हैं। गोस्वामी तुलसीदास, संत कबीर और दादू के दोहों का अंकन भी मंदिर में किया गया है। इन सबका अवलोकन कर प्रधानमंत्री भाव विभोर हो गए।

स्वस्तिवाचन के बीच पीएम मोदी का अभिनंदन

कार्यक्रम के प्रारंभ में प्रधानमंत्री के गीता प्रेस आगमन के साथ ही ऋषिकुल ब्रह्मचर्य आश्रम चुरू राजस्थान में गीता प्रेस की तरफ से संचालित गुरुकुल (वेद विद्यालय) से आए सात वेदपाठी बालकों ने स्वस्तिवाचन कर उनका मंगलमय अभिनंदन किया। स्वस्तिवाचन और श्रीमदभगवतगीता के श्लोकों का पाठ पीएम मोदी के मंच पर पहुंचने तक जारी रहा। स्वस्तिवाचन एवं श्लोक पाठ में एक नन्ही बालिका भी सम्मिलित रही। समारोह स्थल के मंच पर गीता प्रेस के ट्रस्टी देवीदयाल अग्रवाल ने पीएम का स्वागत करते हुए गीता प्रेस के बारे में सविस्तार जानकारी दी। ट्रस्ट की तरफ से प्रधानमंत्री, राज्यपाल व मुख्यमंत्री को उत्तरीय व स्मृति चिन्ह प्रदान कर स्वागत किया। मंच पर पीएम, राज्यपाल, सीएम के अलावा सांसद रविकिशन शुक्ल, गीता प्रेस ट्रस्ट बोर्ड के चेयरमैन केशवराम अग्रवाल, महासचिव विष्णु प्रसाद चांदगोठिया,बैजनाथ अग्रवाल मौजूद रहे। संचालन गीता प्रेस में मैनेजर लालमणि तिवारी ने किया।

शिव महापुराण के दो विशिष्ट अंक दो का विमोचन किया पीएम मोदी ने

गीता प्रेस के शताब्दी वर्ष के समापन समारोह में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने राज्यपाल श्रीमती आनंदी बेन पटेल व मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के साथ आर्ट पेपर पर मुद्रित शिव महापुराण के विशिष्ट रंगीन चित्रमय अंक तथा नेपाली भाषा में प्रकाशित शिव महापुराण का विमोचन किया। रंगीन चित्रमय शिव महापुराण में 225 चित्र भी समाहित हैं जबकि नेपाली भाषा में अनुवादित शिव महापुराण दो खंडों में है। पीएम मोदी ने चित्रमय शिव महापुराण और नेपाली भाषा में शिव महापुराण के विमोचन का अवसर मिलना अपना सौभाग्य बताया।

पीएम के समक्ष हुआ गीता प्रेस पर डॉक्यूमेंट्री फिल्म का प्रदर्शन

शताब्दी वर्ष समापन समारोह में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के समक्ष गीता प्रेस पर चार मिनट की डॉक्यूमेंट्री फिल्म का भी प्रदर्शन हुआ। इस डॉक्यूमेंट्री में गीता प्रेस की स्थापना से लेकर अब तक की यात्रा का वृतांत है। पीएम ने राज्यपाल व सीएम के साथ बड़ी तन्मयता से डॉक्यूमेंट्री फिल्म देखी।

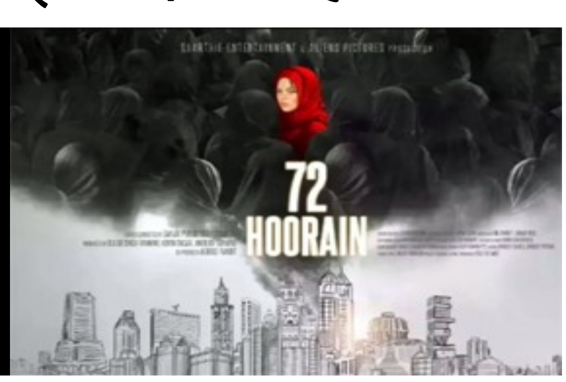
फिल्म समीक्षा: संजय पूरन सिंह की फिल्म आतंकवाद और धर्म के बारे में विचारोत्तेजक सच्चाई पेश करती है

बहकावे में आकर धर्म के नाम पर अधर्म करने वाले आतंकियों को आईना दिखाती है फिल्म



गीता प्रेस आगमन पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सर्वप्रथम राज्यपाल श्रीमती आनंदी बेन पटेल व मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के साथ लीलाचित्र मंदिर का अवलोकन किया।

धर्म के नाम पर लोगों को बरगलाना और उन्हें गलत रास्ते पर ले जाना इस दुनिया में कोई नई बात नहीं है। जिहाद लोगों के बीच आतंक फैलाने के लिए आतंकवादियों द्वारा किया जाने वाला एक अपराध है।



धर्म के नाम पर लोगों को बरगलाना और उन्हें गलत रास्ते पर ले जाना इस दुनिया में कोई नई बात नहीं है। जिहाद लोगों के बीच आतंक फैलाने के लिए आतंकवादियों द्वारा किया जाने वाला एक अपराध है। धर्म की आड़ में निर्दोष और असहाय लोगों को बड़े–बड़े सपने दिखाना और निर्दोष लोगों की हत्या करवाना देश में आम बात हो गई है। निर्देशक संजय पूरन सिंह की फिल्म '72 हुरें' 7 जुलाई को सिल्वर स्क्रीन पर रिलीज हुई। यह फिल्म आतंकवादियों पर एक व्यंग्य है।

अनिल पांडे द्वारा लिखित '72 हुरें' के निर्माताओं ने यह सुनिश्चित किया कि फिल्म के माध्यम से किसी भी धार्मिक भावनाओं को ठेस न पहुंचे। फिल्म की कहानी दो युवकों हाकिम (पवन मल्होत्रा) और साकिब (आमिर बशीर) के इर्द–गिर्द घूमती है। एक मौलाना के बहकावे में आकर दोनों जिहाद के लिए निकलते हैं और मुंबई में गेटवे ऑफ इंडिया पर आत्मघाती हमला करने के लिए तैयार हो जाते हैं। मौलाना उन्हें लालच देते हुए कहते हैं कि जिहादी जिहाद के बाद 'जन्नत' जाते हैं जहां उनकी मुलाकात '72 हूरें' से होती है और अल्लाह के फ़रिश्ते उनकी परछाई बनकर घूमेंगे। लेकिन जब दोनों की मौत हो जाती है तो सच्चाई कुछ और ही निकलती है, उनकी आत्माओं का सच से सामना होता है जो मौलाना की बातों से बिलकुल अलग था। साथ ही उनके परिजनों को उनका अंतिम संस्कार करने और नमाज पढ़ने का भी मौका नहीं मिलता है। उन्हें लगता है कि अगर शायद उनका जनाजा नमाज के साथ कर दिया जाए तो जन्नत के दरवाजे खुल जाएंगे। इस बीच 169 दिन बीत जाते हैं और इन दोनों जिहादियों की आत्माओं का क्या होता है यह देखने के लिए आपको सिनेमा हॉल का रुख करना होगा।

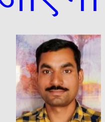
'72 हुरें' इस बात पर प्रकाश डालती है कि कैसे लोगों को धर्म के नाम पर बरगलाया जाता है और आतंकवाद के लिए मजबूर किया जाता है। फिल्म ने लोगों में फैल रहे आतंकवाद के मुद्दे को बहादुरी से उठाया।

कैसी है फिल्म 72 हुरें?

इस फिल्म के निर्देशन की बात करें तो संजय पूरन सिंह ने इसके साथ पूरा न्याय किया है। फिल्म के कुछ दृश्य दिल दहला देने वाले हैं जहां एक महिला आत्महत्या करने जाती है और उसकी मां उसे बताती है कि यह कितना बड़ा अपराध है और इसका आत्मघाती आतंकवादियों की भटकती आत्मा पर क्या प्रभाव पड़ता है, उसी दिशा में बम का दृश्य है ब्लास्ट को ऐसे दिखाया गया है कि आप हिल जाएंगे। निर्देशक ने फिल्म के हर सीन और हर फ्रेम पर कड़ी मेहनत की है और स्क्रीन पर कहानी कहने का उनका दिलचस्प अंदाज दर्शकों के रोंगटे खड़े कर देने के लिए काफी है। सिनेमा प्रेमियों के लिए इस फिल्म की खास बात यह है कि आप बेहतरीन वीएफएक्स के साथ ब्लैक एंड व्हाइट सिनेमा का आनंद लेंगे। आपको फ़िल्म का अधिकांश भाग ब्लैक एंड व्हाइट में देखने को नहीं मिलता है। भटकती आत्माओं के लिए यह एक आदर्श विचार था। अभिनय की बात करें तो पवन मल्होत्रा और आमिर बशीर ने बेहतरीन काम किया है। पूरी फिल्म दोनों कलाकारों के इर्द–गिर्द घूमती है और दोनों कलाकारों ने अपने शानदार अभिनय से फिल्म का स्तर ऊंचा कर दिया है।



मंजिल मिल ही जाएगी



हममें गर जज़्बा हो,
बाँछे खिल ही जाएगी।
कर गुजरने का हो जुनून,
मंजिल मिल ही जाएगी।।
अरे राह में तो शूल भी
चुभेंगे कोमल पैरों में।
पर डगमग ना हो पाँव तेरे,
मुकाम मिल ही जाएगा।।
डगर होगी पथरीली,कंकरीली,
न थक,न रुक,न झुक।
बढ़ाते चल कदम,
आशियाने मिल ही जाएँगे।।
तूझे उड़ना है ऊँचे आसमाँ
तक,नापना है गगन।
हिम्मत जुटा,कर हौसला बुलंद,
ठिकाने मिल ही जाएँगे।।
तुझे नापना है धरा,
रसातल की तह तक।
इरादें कर मजबूत लक्ष्य पर,
लक्ष्य अवश्य भेदे जाएँगे।।

महेन्द्र साहू"खलारीवाला"
गुण्डरदेही बालोद छ ग

रख हौसला तू जारी रख प्रयास

तू अकेला ही बहुत है ज़माने में
रख हौसला तू जारी रख प्रयास
निडरता से चलता चल मंजिल की ओर
मत बैठ यूँ अकेला हो कर उदास
रास्ते में कांटे होंगे सम्भल कर चल
कमज़ोर मत समझ तुझमें है बल
हिम्मत को ढाल बना ले अपनी
हौसलों का छाता ओढ़ कर निकल
मुश्किलों से मत होना हताश
रख हौसला तू जारी रख प्रयास
बुलंद हौसलों को तेरे
कोई क्या ही रोक पायेगा
यह रेत का नहीं महल
जो यूँ ही ढह जाएगा
तूफानों को चीर आगे बढ़ होना मत निराश
रख हौसला तू जारी रख प्रयास
पग पग पर होगा तुझसे विश्वासघात
वह मुंह में राम बगल में
छुरी लेकर चलेंगे तेरे साथ
मौका मिलते ही करेंगे पीछे से वार
घबराकर छोड़ना नहीं तू हौसलों का हाथ
बुलंद हौसले देख कर हो जाएंगे वह हताश
रख हौसला तू जारी रख प्रयास
जुबान उनकी बहुत मीठी होगी
बात बात पर शहद टपकाएँगे
रास्ता रोकेंगे कई चालें चलेंगे
पर तुझको गिरा न पाएंगे
बैठे हैं हर तरफ लगाए घात
रख हौसला तू जारी रख प्रयास

रवींद्र कुमार शर्मा
घुमारवीं
जिला बिलासपुर हि प्र

बम, बंदूक और बवाल बन गये बंगाल की पहचान

पश्चिम बंगाल पंचायत चुनावों में हिंसा की घटनाओं से राज्य में कानून व्यवस्था की स्थिति पर गंभीर सवाल उठे हैं। बंगाल में राजनीतिक दलों के कार्यकर्ताओं की सरेआम हत्या, हिंसा, आगजनी, बमबाजी की बढ़ती घटनाएं और राज्यपाल का अपमान तथा उनके आदेशों की अवमानना की खबरें आम बात हो गयी है जोकि चिंताजनक स्थिति है। इसके अलावा, एक टीवी समाचार चैनल के स्टिंग में बंगाल में बमों के जिस कारोबार को दिखाया गया है उससे सवाल उठता है कि क्या पुलिस प्रशासन आंखें मूंदे बैठा है? यही नहीं, विभिन्न अदालतें कई बार बंगाल में राजनीतिक हिंसा की स्थिति पर चिंता जता चुकी हैं लेकिन इसके बावजूद स्थिति में सुधार नहीं आना इस आरोप को बल प्रदान करता है कि हिंसक तत्वों को सत्ता का समर्थन प्राप्त है। पंचायत चुनाव के लिए मतदान वाले दिन बंगाल में कोई बैलेट बॉक्स लेकर भागता दिखा तो किसी ने बैलेट बॉक्स को आग के हवाले कर दिया तो किसी ने पोलिंग स्टेशन पर तोड़फोड़ की तो किसी ने दूसरे दलों के कार्यकर्ताओं से मारपीट की। कहीं बम फटे, कहीं गोली चली और खबरों के मुताबिक इस चुनावी हिंसा में अब तक राजनीतिक दलों के 15 कार्यकर्ताओं की हत्या हो चुकी है। क्या यही वह शोनार बांग्ला है जिसकी कल्पना रविन्द्र नाथ टैगोर ने की थी? क्या यही वह लो. कतंत्र है जिसके लिए सुभाष चंद्र बोस ने आजादी की लड़ाई लड़ी थी? पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी को प्रधानमंत्री पद की सबसे बढ़िया उम्मीदवार बताने वाले क्या देश को बताएंगे कि आज जो बंगाल में हो रहा है क्या ऐसी ही बम और बंदूक की संस्कृति वह पूरे देश में लाना चाहते हैं? इसके अलावा, हिंसा के इस माहौल को दे खकर भी अवार्ड वापसी गैंग जिस तरह चुप्पी साधे हुए है उसको दे खते हुए मानवाधिकारों और अभिव्यक्ति की आजादी के प्रति उनका दोगलापन एक बार फिर देश के सामने आ गया है। पश्चिम बंगाल विधानसभा में विपक्ष के नेता शुभेन्दु अधिकारी ने अगर राज्य में राष्ट्रपति शासन की मांग की है तो इसमें कुछ भी गलत नहीं है क्योंकि यदि निर्वाचित सरकार से हालात नहीं संभल रहे तो लोगों को यूं ही मरने और हिंसा में घायल होने के लिए नहीं छोड़ा जा सकता। हालिया इतिहास पर गौर करें तो यह देखने को मिलता है कि पश्चिम बंगाल में चुनावों के ऐलान के साथ ही शुरू होने वाला हिंसा का दौर परिणाम बाद तक जारी रहता है। राज्य विधानसभा चुनावों के दौरान लगभग महीने भर जो हिंसा हुई थी उसमें पीड़ितों को आज तक न्याय नहीं मिला। विधानसभा चुनावों के दौरान हुई राजनीतिक हिंसा में भी कई लोग मारे गये थे, किसी को जला कर मारा गया था, किसी को बम से उड़ाया गया था, किसी को फंदे पर लटकाया गया था तो किसी को अन्य निर्मम तरीके से मौत के घाट उतारा गया था। यही नहीं, महिलाओं के साथ दुराचार और दुर्व्यवहार हुआ था, घरों और संपत्तियों को नुकसान पहुँचाया गया था, हालात यह हो गये थे कि बड़ी संख्या में लोग विस्थापित हो गये थे। दुखद है कि आज भी उनमें से अधिकांश लोग न्याय की बाट जोह रहे हैं।

बहरहाल, बंगाल में पंचायत चुनावों का जब ऐलान हुआ उसके बाद से राज्य में हिंसा का तांडव जारी है मगर राज्य सरकार 'ऑल इज वेल' के दावे पर अडिग है। पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी बात तो लोकतंत्र की करती हैं लेकिन उनके अपने राज्य में लोकतंत्र का हाल यह है कि सैंकड़ों की संख्या में विपक्षी दलों के उम्मीदवारों ने पंचायत चुनावों से अपने नाम वापस ले लिये क्योंकि नामांकन दाखिल करने के बाद से उन्हें धमकियां मिल रही थीं। चुनाव को लोकतंत्र का उत्सव माना गया है लेकिन आज के बंगाल का सच यह है कि कोई भी चुनाव आने पर जनता के मन में अपनी सुरक्षा को लेकर डर बैठ जाता है।

बीजेपी आती है, तो भ्रष्टाचार भागता है, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की इस टिप्पणी के बाद भ्रष्टाचार फिर से राजनीति के केंद्र में आ गया है। आजादी के बाद से ही भारत में भ्रष्टाचार एक बड़ा मुद्दा रहा है और सभी पार्टियां इसे खत्म करने का दावा करती रही हैं।

भ्रष्टाचारी नेताओं के दाग भाजपा में धुल जाते हैं, अब यह कोई जुमला नहीं हकीकत बन गया

विपक्षी नेताओं पर सरकारी एजेंसियों की कार्रवाई किसी से छिपी नहीं है। भ्रष्टाचार में संलिप्त कई नेता भाजपा में शामिल हुए और उनसे जुड़े मामलों पर ताला लग गया। विपक्षी पार्टियों की ओर से भी लगातार यह आरोप लगाए जाते रहे हैं कि भाजपा वाशिंग मशीन की तरह है, उसमें जो भी जाता है उसके सारे दाग धुल जाते हैं। जिन नेताओं पर घोटाले के कई बड़े आरोप हैं वह जब भाजपा में चले गये तो एक तरह से जांच एजेंसियों की ओर से उन्हें क्लीन चिट मिल गयी। महाराष्ट्र सरकार में अजित पवार समेत कई नेताओं के शामिल होने के बाद से बवाल मचा हुआ है। भाजपा ने भ्रष्टाचार का आरोप झेल रहे अजित पवार और दूसरे विधायकों को महाराष्ट्र सरकार में शामिल करवा कर पक्षपात करने और केंद्रीय एजेंसियों के दुरुपयोग करने का आरोप लगाकर विपक्षी दलों को मौका दे दिया।

विपक्षी नेताओं का कहना है कि जिन पर कल तक भ्रष्टाचार के आरोप लगाए जा रहे थे, उन्हें सरकार में मंत्री बना लिया गया। प्रधानमंत्री मोदी ने कुछ दिन पहले ही एनसीपी को नेचुरली करप्ट पार्टी कहा था, अब वही दल महाराष्ट्र की भाजपा सरकार में सत्ता में भागीदारी कर रहा है। महाराष्ट्र में उपमुख्यमंत्री बनाए गये अजित पवार को पीएम मोदी ने कॉआपरेटिव घोटाले का आरोपी बताया था। इसका जिक्र मोदी ने भोपाल में दिए गए भाषण में किया था। इसी तरह महाराष्ट्र में भाजपा के उपमुख्यमंत्री देवेन्द्र फडणवीस ने कहा था कि हमारी सरकार आने पर अजित दादा चक्की पीसिंग एंड पीसिंग। अब वही पवार उपमुख्यमंत्री का पद पाकर फडणवीस के बराबर आ गए। पाला बदल कर आए छगन भुजबल महाराष्ट्र सदन घ ोटाले में जेल तक जा चुके हैं। इसी तरह हसन मुशरिफ और उनके तीन बेटों पर मनी लॉन्ड्रिंग के आरोप हैं। मंत्री बनी अदिति तटकरे के पिता के ि खलाफ एसीबी ने सिंचाई घोटाले में चार्जशीट फाइल कर रखी है। पूर्व केंद्रीय मंत्री प्रफुल्ल पटेल ने अंडरवर्ल्ड डॉन दाऊद इब्राहिम के करीबी इकबाल मिर्ची के मुंबई में एक प्लॉट पर बिल्डिंग बनवाई। ऐसे आरोप लगे कि इस बिल्डिंग में प्रफुल्ल पटेल का भी एक फ्लैट है। इस साल फरवरी में बिल्डिंग के चार फ्लोर को अटैच किया गया था। इसके अलावा एविएशन स्कैम में भी प्रफुल्ल पटेल जांच के दायरे में हैं।

विपक्षी दलों का आरोप है कि जो भाजपा का दामन थाम लेता है, उसका दामन पाक साफ हो जाता है। विगत वर्षों में भाजपा में शामिल होने के बाद शुभेन्दु अधिकारी, हिमंत बिस्वा सरमा, मुकुल रॉय, नारायण राणे जैसे कई भ्रष्टाचार के आरोपी नेताओं के दाग धुल गए हैं।

इस कवायद पर एनसीपी के अध्यक्ष शरद पवार ने तंज कसते हुए कहा कि दो दिन पहले ही प्रधानमंत्री ने एनसीपी को भ्रष्टाचार के लिए टारगेट किया था, प्रधानमंत्री का शुक्रिया कि उनके सरकार में शामिल होने से वे सभी आरोपों से मुक्त हो गए हैं। 2014 के बाद से नरेंद्र मोदी सरकार लगातार विपक्षी नेताओं के खिलाफ भ्रष्टाचार के आरोप लगा रही है। छापेमारी और समन खासकर तब तेज हो जाते हैं जब चुनाव नजदीक हों। लेकिन यह भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ाई नहीं है क्योंकि अगर यह लड़ाई होती तो यह भ्रष्टाचार के आरोपी भाजपा नेताओं को नहीं बख्शती। इस भ्रष्टाचार–विरोधी एजेंडे की चयनात्मक प्रकृति इसे एक जादू–टोना बना देती है।

यह जादू–टोना मोदी सरकार द्वारा विवादास्पद राफेल सौदे की जांच कराने से इंकार करने, या जिस तरीके से उसने पांच साल के लिए लोकपाल नियुक्त करने से अपने पैर खींच लिए थे, उसके बिल्कुल विपरीत है। बीजेपी आती है, तो भ्रष्टाचार भागता है, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की इस टिप्पणी के बाद भ्रष्टाचार फिर से राजनीति के केंद्र में आ गया है।

आजादी के बाद से ही भारत में भ्रष्टाचार एक बड़ा मुद्दा रहा है और सभी पार्टियां इसे खत्म करने का दावा करती रही हैं। बीजेपी भी इससे अछूती नहीं है। पिछले दिनों सीबीआई और ईडी की कार्रवाई के खिलाफ 14 दलों ने सुप्रीम कोर्ट का रु ख किया तो खुद प्रधानमंत्री मोदी इसके बचाव में उतर आए। हालांकि कोर्ट से विपक्षी दलों को निराशा हाथ लगी। प्रधानमंत्री ने कहा कि भ्रष्टाचार में लिप्त नेता एक साथ एक मंच पर आ रहे हैं। कुछ दलों ने भ्रष्टाचारी बचाओ आंदोलन छेड़ा हुआ है, लेकिन एक्शन नहीं रुकेगा।

प्रधानमंत्री की टिप्पणी के बाद विपक्ष ने भी इस बार जोरदार पलटवार कर दिया। तृणमूल कांग्रेस के अध्यक्ष ममता बनर्जी ने मंच पर वाशिंग मशीन लगाकर बीजेपी पर तंज कसा। ममता ने कहा कि बीजेपी वाशिंग मशीन है और दागियों को धुलकर सफेद कर देती है। ममता ने इसका लाइव डेमो भी दिखाया। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने भी ट्वीट कर मोदी सरकार पर निशाना साधा। खरगे ने कहा कि विपक्ष के 95 फीसदी नेताओं पर ईडी और सीबीआई का केस दर्ज हुआ है, लेकिन जो नेता बीजेपी में शामिल हो जाते हैं उसका दाग धुल कर साफ कर दिया जाता है। आप संयोजक अरविंद केजरीवाल ने कहा है कि प्रधानमंत्री भ्रष्टाचार के खिलाफ नहीं हैं, बल्कि वे कहते हैं कि बीजेपी में आकर भ्रष्टाचार करो। गौरतलब है कि ईडी और सीबीआई के दुरुपयोग को लेकर विपक्षी दलों ने प्रधानमंत्री को पत्र भी लिखा था। पीएम मोदी को लिखे पत्र में विपक्ष ने आरोप लगाया था कि सरकार विपक्ष के खिलाफ ईडी और सीबीआई का इस्तेमाल कर रही है, साथ ही बीजेपी नेताओं के खिलाफ जांच धीमी गति से चलती है। पत्र में ईडी और सीबीआई जैसी एजेंसियों के कथित दुरुपयोग की निंदा की गई।

विपक्ष ने केंद्रीय एजेंसियों की खराब होती छवि पर गहरी चिंता व्यक्त की। चाल, चरित्र और चेहरे के बदलाव का दावा करने वाली भाजपा ने महाराष्ट्र में भ्रष्टाचार के आरोपी एनसीपी के विधायकों को सरकार में शामिल करा कर कथनी और करनी के अंतर को मिटा दिया है। अब सवाल यही उठता है कि भाजपा किस मुंह से विप क्ष पर भ्रष्टाचार में शामिल होने के आरोप लगाते हुए देश के लोगों को आगाह कर पाएगी। भाजपा कैसे कह पाएगी कि विपक्ष के गठबंधन की कवायद सत्ता पाने की आड़ में भ्रष्टाचार पर पर्दा डालने के लिए है। यदि राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में देखें तो भाजपा की महाराष्ट्र में आरोपी एनसीपी के विधायकों को सरकार में शामिल कराने से कोई बहुत बड़ा राजनीतिक फायदा नहीं मिलने वाला, किन्तु इससे भाजपा का भ्रष्टाचार का अभियान जरूर भौंथरा हो गया। जिसे प्रमुख आधार बना कर भाजपा ने न सिर्फ केंद्र में बल्कि कई प्रदेशों में सत्ता हासिल की है। भाजपा ने राह चलते ही विप क्षी दलों को उल्टे हमले का मुद्दा थमा दिया। प्रधानमंत्री मोदी की तरह ही विपक्ष भी भ्रष्टाचार लेकर अब आक्रामक मुद्रा में आ गया है। निश्चित तौर पर भाजपा ने अजित पवार गुट को सत्ता में शामिल करके जो ऐतिहासिक भूल की है, विपक्ष चुनाव में उसे भुनाए बगैर नहीं रहेगा।

–योगेन्द्र योगी

यूपी में पहले मंत्री की भैंस खोजी जाती थी, अब कमिश्नर का कुत्ता

उत्तर प्रदेश में यह योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व वाली भाजपा सरकार का दूसरा कार्यकाल है। भाजपा सरकार के पहले और वर्तमान कार्यकाल का लेखा–जोखा किया जाए तो सिर्फ इतना ही कहा जा सकता कि पहले सपा सरकार में पुलिस और प्रशासनिक तंत्र तत्कालीन मंत्री आजम खान की चोरी हुई भैंस ढूंढ़ता था, अब प्रशासनिक अमला मेरठ के कमिश्नर का खोया कुत्ता ढूंढ़ता है। इतना परिवर्तन हुआ है कि सपा–बसपा सरकारों में मंत्री हावी थे। आज अधिकारी हावी हैं। ये अधिकारी किसी की सुनते नहीं। इन पर कोई लगाम नहीं।

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की ईम. ानदारी और प्रशासनिक क्षमता को कोई मुकाबला नहीं। बेईमानी उन्हें बर्दाश्त नहीं। बेईमानी की शिकायत मिलते ही वह जांच कराकर कार्रवाई करते हैं। प्रदेश में माफियाओं पर की गई कार्रवाई पूरी दुनिया के लिए नजीर बन गई है। प्रदेश में माफिया खत्म ही नहीं हुए, उनके द्वारा अर्जित संपत्ति सरकार ने जब्त कर ली, उनके अवैध रूप से बने भवन जमींदोज करा दिये गए। अपराधी उनके कार्यकाल में अपनी जान बख्शने की अपील करने के लिए खुद हाथ उठाकर थाने चले आते हैं, प्रदेश में दंगे होने बंद हो गए। कोरोना का संकट हो या अन्य कोई प्राकृतिक आपदा, योगी जी के नेतृत्व में सबका बहुत अच्छे से मुकाबला किया गया है। प्रदेश के धार्मिक स्थलों से एक साथ, एक झटके में लाउडस्पीकर उतर गए। अब न सड़कों पर नमाज होती है, न हनुमान चालीसा। प्रदेश में सरकारी सुविधाओं का लाभ सबको समान रूप से मिल रहा है। कोई दुराव नहीं, कोई भेद नहीं। आजकल फ्रांस में दंगे भड़के हुए हैं। हालात सरकार के काबू से बाहर हैं। ऐसे में ट्विटर पर प्रो. एन जॉन कैम नाम के शख्स ने ट्वीट किया, "भारत को फ्रांस में दंगों की स्थिति को नियंत्रित करने के लिए यूपी के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को वहां भेजना चाहिए। वह 24 घंटे के भीतर दंगों को रोक देंगे। ये ट्वीट योगी आदित्यनाथ की क्षमता और प्रशासनिक कुशलता बताने के लिए काफी है। उनकी क्षमता और कार्यप्रणाली लाजवाब है, पर अमला तो वही पुराना है। व्यवस्था सब वैसी ही है।

योगी आदित्यनाथ की सख्ती के बावजूद प्रदेश में प्रशासनिक तंत्र बेकाबू है। पुलिस में संवेदनाएं नहीं हैं। भाजपा नेताओं, विधायकों और मंत्रियों पर अधिकारी हावी हैं। इसीलिए भ्रष्टाचार कम होने की जगह बढ़ा है।

मेरठ की कमिश्नर सेल्वा कुमारी जे. का साइबेरियन हस्की ब्रीड का डॉगी 25 घंटे बाद मिल गया। पशु कल्याण विभाग और नगर निगम की टीमें डॉगी की तस्वीर को लेकर घर–घर जाकर पूछताछ कर रहीं थीं। डॉगी को कमिश्नर आवास से करीब दो किलोमीटर दूर पांडव नगर से बरामद किया गया। ये कमिश्नर का कुत्ता था इसलिए प्रशासनिक अमला दौड़ता रहा। आम आदमी की बेटी लापता हो जाए तो किसी को परेशानी नहीं होती, किसी को ये ख्याल नहीं आता कि वह बच्ची किस हाल में होगी। आम आदमी के घर चोरी हो जाए तो उसकी रिपोर्ट तक दर्ज नहीं होती। योगी आदित्यनाथ संवेदनशील हैं। जरा सी बात को गंभीरता से लेते हैं किंतु उनका तंत्र–प्रशासनिक अमला बिल्कुल भी गंभीर नहीं है। मानवीय संवेदनाएं उसमें नजर नहीं आतीं। पीलीभीत में एक नाबालिग लड़की को तीन

अभी झांसी के एक भवन में आग लगने से चार व्यक्ति जिंदा जल कर मर गए। आग इतनी जबरदस्त थी कि सेना को बुलाना पड़ा। प्रदेश के अग्निशमन के तो उपकरणों ने काम ही नहीं किया। इस भवन का एक ही द्वार था। प्रश्न यह है कि इस भवन का नक्शा कैसे पास हो गया।

लड़के उठा ले गए। एक लड़के ने रेप किया। बच्ची के पिता चाहते थे कि आरोपियों पर कार्रवाई हो, लेकिन पुलिस कार्रवाई की बजाय समझौते पर जोर दे रही थी। एक हफ्ते बाद युवती के पिता ने आत्महत्या कर ली। ठीक इसी तरह जालौन में बेटी के साथ रेप हुआ। वह प्रेग्नेंट हो गई।

पीड़िता के मजदूर पिता केस दर्ज करवाने गए तो पुलिस ने उल्टा केस करने की धमकी दी। घर आए और आत्महत्या कर ली। एक हफ्ते पहले अमरोहा में एक किसान और लखनऊ के मलिहाबाद में एक युवक ने भी पुलिस की कार्यप्रणाली से परेशान होकर सुसाइड को चुन लिया। इन चार केस के अलावा पांचवां केस सीतापुर से है। यहां रेप पीड़िता ने फांसी लगा ली। कुल मिलाकर 25 दिन के अंदर एक रेप पीड़िता, दो रेप पीड़िताओं के पिता, एक प्रतियोगी छात्र और एक किसान ने आत्महत्या की। कहीं पुलिस पर कार्रवाई न करने का आरोप लगा तो कहीं 50 हजार रुपए मांगने का मामला सामने आया। आमतौर पर पुलिस की कोशिश मामले को निपटाने में रहती है।

फिलहाल इन पांच मामलों में चार मामले ऐसे थे जो पुलिस की जानकारी में थे। इसके बावजूद उन्होंने समय पर कार्रवाई नहीं की। इसकी वजह से पीड़ित प क्ष ने सुसाइड किया। इन चारों मामलों में पुलिस प्रश. ासन की किरकिरी हुई तो संबंधित अधिकारी को निलंबित किया गया। लेकिन तब तक देर हो चुकी थी। बिजनौर जनपद के धामपुर थाना क्षेत्र के गांव सरकड़ा की एक महिला ने विद्युत निगम के जेई की हरकतों से तंग आकर जहर खाकर जान देने का प्रयास किया। इससे पहले गांव के लोगों ने कोतवाल से मिल कर आरोपी जेई सहित दो कर्मचारियों के खिलाफ पुलिस में नामजद तहरीर दे दी थी। पर पुलिस की ओर से आरोपियों पर रिपोर्ट कायम कर कार्रवाई नहीं हुई। बकौल ग्रामीण, ऐसे में जेई अपने लोगों को पीड़िता के घर भेज कर समझौता करने का अनर्गल दबाव बनाने का प्रयास कर रहा था। कई दिन से महिला के घर जेई के लोग जाकर जबरन दबाव बनाने का प्रयास कर रहे थे।

अभी झांसी के एक भवन में आग लगने से चार व्यक्ति जिंदा जल कर मर गए। आग इतनी जबरदस्त थी कि सेना को बुलाना पड़ा। प्रदेश के अग्निशमन के तो उपकरणों ने काम ही नहीं किया। इस भवन का एक ही द्वार था। प्रश्न यह है कि इस भवन का नक्शा कैसे पास हो गया। यदि नक्शा पास नहीं हुआ तो भवन बन कैसे गया।

लखनऊ में पिछले दिनों हजरतगंज के चार सितारा होटल लेवाना सुइट्स में आग में दम घुटने से चार लोगों की मौत हो गई। 16 लोग घायल हो गए। बाद में जांच हुई तो पता चला कि यह होटल बिना अनुमति के बना है। ये ही नहीं कई होटल बिना अनुमति चलते मिले। कहीं भी जांच करा लीजिए। नीचे सारा घालमेल है। कोई सुनने वाला नहीं।

योगी आदित्यनाथ ने जबसे अधिकारियों से कहा है कि किसी की मत सुनिए। सही करिए, तब से तो मामला और आगे बढ़ गया। पहले अधिकारी सत्ताधारी पार्टी के नेताओं, विधायक सांसद से डरता था, अब यह सब खत्म हो गया। शोर मचने पर प्रशासन और सत्ताधारी पार्टी के नेताओं में समन्वय के लिए जिलों में कार्डिनेटर बनाने पड़े। पर पटरी से उतरे प्रशासनिक अमले पर कोई फर्क नहीं पड़ा।

सरकार का दबाव प्रदेश के विकास पर है। उद्योग लगाने पर है। जब उद्योग लगते हैं तो अधिकारी मुंह फैलाकर खड़े हो जाते हैं। पर प्रायः एनओसी देने वाले अधिकारी सुविधा शुल्क के बिना कुछ करने को तैयार नहीं। सरकारी तंत्र की क्या हालत है, यह बताने के लिए प्रदेश के नगर विकास एवं ऊर्जा मंत्री एके शर्मा की ये प्रतिक्रिया काफी है। उन्होंने बुधवार को राजस्व वसूली की कमी पर पर नाराजगी जताई। उन्होंने कहा कि ऊपर से नीचे तक विभाग में भ्रष्टाचार व्याप्त है। सरकार की मंशा भ्रष्टाचार के प्रति जीरो टॉलरेंस की है, छोटे उपभोक्ताओं व गरीबों पर वसूली एवं जांच के नाम पर एफआईआर दर्ज कराई जा रही है, जबकि बड़े बकायेदारों पर कोई भी कार्रवाई नहीं की जा रही है। उन्होंने विभागीय अफसरों एवं कर्मचारियों को धृतराष्ट्र बताया। समीक्षा के दौरान आक्रोशित ऊर्जा मंत्री ने कहा कि ऐसा लग रहा है कि बिजली विभाग में कोई भी कार्य जिम्मेदारी के साथ व्यवस्थित तरीके से नहीं हो रहा है।

सभी अधिकारी एवं कर्मचारी जिम्मेदारी के प्रति आंखें बंद किए हुए हैं। वे धृतराष्ट्र बने हुए हैं। ये टिप्पणी बिजली विभाग के बारे में विभागीय मंत्री की है, वैसे सभी विभागों का हाल एक ही जैसा है। सभी विभागों का ढर्रा एक–सा ही है। प्रदेश में भ्रष्टाचार रोकने के लिए योगी आदित्यनाथ को रिश्वतखोर और बेइमान अधिकारियों के विरुद्ध भी वैसा ही अभियान चलाना होगा जैसा माफियाओं के विरुद्ध चलाया गया था। आय से अधिक संपत्ति मिलने पर अधिकारी के विरुद्ध आपराधिक मुकदमा दर्ज होने के साथ अवैध रूप से अर्जित उनकी और उनके परिवारजनों की संपत्ति भी जब्त की जानी चाहिए।

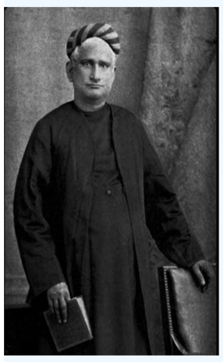
पिछले दिनों प्रदेश सरकार ने आदेश किया था कि सभी अधिकारी अपनी और अपने परिवार जनों की संपत्ति घोषित करें, क्योंकि लगभग सभी इसमें फंस रहे थे, तो सब दब गया। होना यह चाहिए कि आदेश हो कि नौकरी लगने के समय सभी अधिकारी और कर्मचारी अपनी अपने भाई–बहन, मातादृपिता की संपत्ति घोषित करें। अपने सारे बैंक खातों और उनमें जमा रकम की जानकारी दें।

यही आदेश कार्यरत सभी विभागों के कर्मचारी और अधिकारी के लिए भी हो। कर्मचारी और अधिकारी की संपत्ति का सारा डाटा आनलाइन होना चाहिए ताकि कोई भी देख ले। ऐसा होता है तो कर्मचारी भ्रष्टाचार करते डरेगा। उस पर कार्रवाई करते भी आसानी होगी। नहीं तो जैसा चल रहा है, वैसा ही चलता रहेगा। इसमें कोई अंतर नहीं आने वाला है। फंसने वाले के विरुद्ध ही कार्रवाई होगी। बाकी सब ईमानदार बने रहेंगे।

–अशोक मधुप

'अंग्रेज़ी न तो तुम्हारी मातृभाषा है और न ही मेरी'

बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय का जन्म 26 जून 1838 को उत्तरी चौबीस परगना के कंठालपाड़ा, नैहाटी में एक परंपरागत और समृद्ध बंगाली परिवार में हुआ था। बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय की शिक्षा हुगली कॉलेज और प्रेसीडेंसी कॉलेज, कोलकाता में हुई। उन्होने 1857 में बीए पास किया और 1869 में क़ानून की डिग्री हासिल की। इसके बाद में उन्होने सरकारी नौकरी कर ली और 1891 में सरकारी सेवा से रिटायर हुए। बंकिमचंद्र का जन्म उस काल में हुआ जब बंगला साहित्य का न कोई आदर्श था और न ही रूप या सीमा का कोई विच. ार। 'वन्दे मातरम्' राष्ट्रगीत के रचयिता होने के नाते वे बड़े सम्मान के साथ सदा याद किए जायेंगे। उनकी शिक्षा बंगला के साथ–साथ अंग्रेज़ी व संस्कृत में भी हुई थी। आजीविका के लिए उन्होंने सरकारी सेवा की, परन्तु राष्ट्रीयता और स्वभाषा प्रेम उनमें कूट–कूट कर भरा हुआ था। युवावस्था में उन्होंने अपने एक मित्र का अंग्रेज़ी में लिखा हुआ पत्र बिना पढ़े ही इस टिप्पणी के साथ लौटा दिया था कि, 'अंग्रेज़ी न तो तुम्हारी मातृभाषा है और न ही मेरी'। सरकारी सेवा में रहते हुए भी वे कभी अंग्रेज़ों से दबे नहीं।



साहित्य क्षेत्र में प्रवेश

बंकिम ने साहित्य के क्षेत्र में कुछ कविताएँ लिखकर प्रवेश किया। उस समय बंगला में गद्य या उपन्यास कहानी की रचनाएँ कम लिखी जाती थीं। बंकिम ने इस दिशा में पथ–प्रदर्शक का काम किया। 27 वर्ष की उम्र में उन्होंने 'दुर्गेश नंदिनी' नाम का उपन्यास लिखा। इस ऐतिहासिक उपन्यास से ही साहित्य में उनकी धाक जम गई। फिर उन्होंने 'बंग दर्शन' नामक साहित्यिक पत्र का प्रकाशन प्रारम्भ किया। रबीन्द्रनाथ ठाकुर 'बंग दर्शन' में लिखकर ही साहित्य के क्षेत्र में आए। वे बंकिम को अपना गुरु मानते थे। उनका कहना था कि, 'बंकिम बंगला लेखकों के गुरु और बंगला पाठकों के मित्र हैं'।

बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय की पहचान बांग्ला कवि, उपन्यासकार, लेखक और पत्रकार के रूप में है। उनकी प्रथम प्रकाशित रचना राजमोहन्स वाइफ थी। इसकी रचना अंग्रेजी में की गई थी। उन्होंने 1865 में अपना पहला उपन्यास 'दुर्गेश नन्दिनी' लिखा। यह एक रूमानी रचना है। उनकी अगली रचना का नाम कपालकुंडला (1866) है। इसे उनकी सबसे अधिक रूमानी रचनाओं में से एक माना जाता है। उन्होंने 1872 में मासिक पत्रिका बंगदर्शन का भी प्रकाशन किया। अपनी इस पत्रिका में उन्होंने विषवृक्ष (1873) उपन्यास का क्रमिक रूप से प्रकाशन किया। कृष्णकांतेर विल में चट्टोपाध्याय ने अंग्रेजी शासकों पर तीखा व्यंग्य किया है।

बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय ने 20 दिसंबर 1876 में राष्ट्र गीत 'वंदे मातरम' की रचना की। जिसे बाद में आनन्द मठ नामक उपन्यास में शामिल किया गया। आनंदमठ (1882) राजनीतिक उपन्यास है। इस उपन्यास में उत्तर बंगाल में 1773 के संन्यासी विद्रोह का वर्णन किया गया है। इस पुस्तक में देशभक्ति की भावना है। चट्टोपाध्याय का अंतिम उपन्यास सीताराम (1886) है। इसमें मुस्लिम सत्ता के प्रति एक हिंदू शासक का विरोध दर्शाया गया है।

उनके अन्य उपन्यासों में दुर्गेशनंदिनी, मृणालिनी, इंदिरा, राधारानी, कृष्णकांतेर दफ्तर, देवी चौधरानी और मोचीराम गौरेर जीवनचरित शामिल है। उनकी कविताएं ललिता ओ मानस नामक संग्रह में प्रकाशित हुई। उन्होंने धर्म, सामाजिक और समसामायिक मुद्दों पर आधारित कई निबंध भी लिखे।

बंकिमचंद्र के उपन्यासों का भारत की लगभग सभी भाषाओं में अनुवाद किया गया। बांग्ला में सिर्फ बंकिम और शरतचन्द्र चट्टोपाध्याय को यह गौरव हासिल है कि उनकी रचनाएं हिन्दी सहित सभी भारतीय भाषाओं में आज भी चाव से पढ़ी जाती है। लोकप्रियता के मामले में बंकिम और शरद और रवीन्द्र नाथ टैगोर से भी आगे हैं। बंकिम बहुमुखी प्रतिभा वाले रचनाकार थे। उनके कथा साहित्य के अधिकतर पात्र शहरी मध्यम वर्ग के लोग हैं। इनके पात्र आधुनिक जीवन की त्रासदियों और प्राचीन काल की परंपराओं से जुड़ी दिक्कतों से साथ साथ जूझते हैं। यह समस्या भारत भर के किसी भी प्रांत के शहरी मध्यम वर्ग के समक्ष आती है। लिहाजा मध्यम वर्ग का पाठक बंकिम के उपन्यासों में अपनी छवि देखता है। बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय की मृत्यु 8 अप्रैल 1894 को हुई।

सावन में महामृत्युंजय मंत्र का जाप करने से दूर होंगे सारे कष्ट

भगवान शिव को देवों के देव महादेव कहा जाता है। हिंदू धर्म में भगवान भोलेनाथ को सबसे उच्च स्थान प्राप्त है। इन्हें महाकाल भी कहा जाता है। क्योंकि भगवान शिव की कृपा से बड़ा से बड़ा संकट या काल भी किसी व्यक्ति का कुछ नहीं बिगाड़ सकता है। शास्त्रों में भगवान भोलेनाथ के कई ऐसे चमत्कारिक मंत्रों का उल्लेख मिलता है। इन्हीं मंत्रों में एक मंत्र महामृत्युंजय मंत्र भी है। इस मंत्र का जाप कर व्यक्ति रोगमुक्त, भयमुक्त और अकाल मृत्यु से खुद को दूर रख सकता है। इस मंत्र का जाप करने से भगवान शिव काफी प्रसन्न होते हैं। बता दें कि इस मंत्र का वर्णन यजुर्वेद में भी मिलता है। संस्कृत में महामृत्युंजय मंत्र का उल्लेख मृत्यु को जीतने वाला हो। भगवान भोलेनाथ की स्तुति के लिए महामृत्युंजय मंत्र का जाप किया जाता है। शिवपुराण के मुताबिक महामृत्युंजय मंत्र के जाप से संसार के सभी कष्टों से मुक्ति मिलती है। ऐसे में आज हम आपको इस आर्टिकल के जरिए महामृत्युंजय मंत्र का हिंदी अर्थ और इसके महत्व और जाप विधि के बारे में बताने जा रहे हैं।

ऊँ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान् मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।।

इस मंत्र का हिंदी में अर्थ इस प्रकार से है– कि इस जगत के पालनहार, तीन नेत्रों वाले भगवान शंकर की हम स्तुति करते हैं। पूरे संसार में सुगंध फैलाने वाले भगवान शिव हमें मृत्यु के बंधन से मुक्ति प्रदान करें। जिससे कि हम मोक्ष की प्राप्ति कर सकें। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, सवा लाख बार इस मंत्र का जाप करना चाहिए। यदि कोई व्यक्ति इस मंत्र का सवा लाख बार जाप नहीं कर सकता है तो वह 108 बार महामृत्युंजय मंत्र का जाप कर सकता है। सावन के महीने में इस मंत्र का जाप करना बेहद कल्याणकारी माना जाता है। अगर आप सावन के इतर इस मंत्र का जाप करना चाहते हैं तो इसकी शुरूआत सोमवार से करें। इस मंत्र का जाप करने के लिए रुद्राक्ष की माला का प्रयोग करना चाहिए। महामृत्युंजय मंत्र के प्रभाव से व्यक्ति को अकाल मृत्यु का भय नहीं होता है।

इस मंत्र के जाप से भगवान शिव–शंकर प्रसन्न होते हैं और जातक को कष्टों से मुक्ति मिलती है।

इस मंत्र के जाप से रोगों का नाश होता है। महामृत्युंजय मंत्र का जाप करने से व्यक्ति को धन–धान्य की कमी नहीं होती है।

हम जड़ में मट्ठा डालकर समस्या समाप्त करने वाले लोग है..!

व्यंगिस्तान के मेरे मित्रों अब जब आप सब अखबारी कॉलम में यह व्यंग्य पढ़ रहे तो आपको बता दूं कि मुझे किसी राजनैतिक दल का पक्का सपोर्टर मानने की भूल कदापि न करें । मुझे मेरे मित्र इस पॉलिटिकल लेखन की दुनिया का पलटुराम कहते है, क्यों ? उसका भी कारण बताऊंगा पर पहले आपको यह बता दूं कि राजनीति में कोई किसी का नही होता तो मैं भी किसी का नही । बात उस समय की है जब हमारे मोई जी ने माफी मांगते हुए तीनों कृषि कानून वापस ले लिए थे और शाहीन बाग वाले टिकैत के फूफा जी फूले नहीं समा रहे थे। मोई जी के ऐसा करते ही मेरे एक तेजस्वी सपोर्टर बिहारी मित्र ने मुझसे कहा कि देख लिया न इस चाय वाले को ? इसीलिए, मैं तो पहले से ही बोल रहा था कि इसके बस का कुछ नहीं है यह बस सब बेचेगा और माफी मांग झोला उठा निकल लेगा ,एकदम फट्टू है ये यार ! उसकी बातें सुनकर मैंने थोड़ी देर उसका मुँह देखा और बोला कि तुम भले ही कितना भी बोलो कि तुम चाणक्य की धरती बिहार से हो लेकिन, तुम चाणक्य के नाम पर कलंके हो । इस पर वो मित्र तिलमिला गया और आक्रामकता से बोला कि अबे, अब इस माफी मांगने में क्या कोई मास्टरस्ट्रोक है बे ? क्यों हमेशा आईटी सेल की तरह बात करते रहते हो । उसकी ऐसी बात पर मुझे जोर की हंसी आ गई और हंसते हुए कहा कि अबे, हमारी छोड़ो..! और, तुम अपनी बताओ कि तुम हो तो आचार्य चाणक्य की धरती से लेकिन, कभी आचार्य चाणक्य को पढ़ा भी है ? खास कर के वो कहानी कि जब आचार्य चाणक्य को एक बार पैर में कांटा चुभा था तो उन्होंने सड़क पर से उस कांटे को उखाड़ कर नहीं फेंका था बल्कि उस कंटीली झाड़ी के जड़ में मट्ठा डालकर उसे हमेशा के लिए समाप्त कर दिया था ।

इस पर मित्र ने कहा तो ? अब मोई जी माफी मांग के कौन सा जड़ में मट्ठा डाल रहे हैं ? फिर मैंने उसे बताया कि अबे, माफी मांग के मट्ठा नहीं डाल रहे हैं बल्कि माफी मांग के सड़क पर का कांटा उठा के फेंक रहे हैं ताकि तात्कालिक तौर पर ये समस्या सुलट जाए ,इतनी जल्दी मट्ठा डालकर पौधा थोड़े न सूखता है , फिर मैंने उसे आगे पूछा कि क्या तुम्हें सच में लगता है कि आचार्य चाणक्य इतने फुरसतिया थे कि वे रोज जाकर उस झाड़ी के जड़ में मट्ठा डालते होंगे ? शायद नहीं न ये सिर्फ एक प्रतीकात्मक कहानी है जिसका अर्थ है कि अगर कहीं कोई समस्या है तो उस समस्या के कांटे को मत तोड़ो । क्योंकि, कांटे तोड़ने से उस कांटे से तात्कालिक राहत तो मिल जाएगा लेकिन कुछ दिनों बाद वो कांटा फिर से उग आएगा । इसीलिए, यदि किसी कांटे या कंटीली झाड़ी से परमानेंट मुक्ति चाहिए तो उसके जड़ को समाप्त कर दो । ये सब हम नहीं कह रहे हैं बल्कि आचार्य चाणक्य ने ही कहा है जिसकी धरती से तुम आते हो । और एक बात कि अभी जो ये मोई, शाह, डोवाल और जय शंकर जी की जो जोड़ी है न वो, इन सबसे निपटने के लिए बेस्ट है क्योंकि, इससे बेहतर जोड़ी और कोई नहीं हो सकती है । खास कर डोवाल साहब तो इन कालिस्तानियो के मामले में पीएचडी हैं ।इसीलिए, तुम कान में तेल डालकर सो जाओ या फिर टीवी पर महागठबंधन की खबरें देख कर उड़ते फिरों।

असल में उस खिसान आंदोलन में कौन इन्वॉल्व है और उनकी मंशा क्या है ये बात हमसे ज्यादा मोई जी को मालूम थी । लेकिन, मुसीबत ये थी कि उन्होंने खिसानी बुर्का ओढ़ रखा था । और, भारतीय जनमानस किसानों, गरीबो और महिलाओं के प्रति अतिसंवेदनशील है । इसीलिए, अगर उस समय सरकार दबंग बनकर उनपर लाठियाँ बरसाती तो कालीस्थानियो का तो कुछ नहीं बिगड़ता लेकिन सरकार की छवि खिसान विरोधी जरूर हो जाती । इसके अलावा इस लाठीबाजी को काली स्थानियो द्वारा खूब भुनाया जाता जिससे पंजाब एक बार फिर से 1980 के दशक की तरह सुलगने लगता । और, इसीलिए कालिस्तानी, खिसानों को आगे रखकर अपनी तरफ से सरकार को इस हेतु उकसाने का भरपूर प्रयास कर रहे थे कि सरकार किसी भी तरह से लाठी या गोली चलाये ताकि हमलोग इसको भुना सकें । मासूमों को मार कर बेरिकेट पर टांग देना, गणतंत्र दिवस पर लाल किले में उपद्रव करना आदि उसी प्लान का हिस्सा था । लेकिन, मोई जी ने संयम से काम लिया और उनकी हर गतिविधि पर पैनी नजर बनाए रखी कि उन्हें इस सबके लिए पैसा और इंस्ट्रक्शन आदि कहाँ से आ रहे हैं ? सारा कुछ समझ लेने और अपना टारगेट फिक्स कर लेने के बाद मोई जी ने माफी मांगते हुए सभी खिसान कानून वापस ले लिए और यहाँ का तात्कालिक मजमा हटवा दिया । इसके बाद इसका पार्ट 2 शुरू हुआ। जिसमें देश से लेकर विदेश तक के सभी मास्टर माइंड , फाइनेन्सर और इसके अमलकर्त्ता मोसाद की तर्ज पर निपटा दिए गए । अभी की सूचना के अनुसार इसका सबसे नेता गुरपीत सिंह पन्नू भी अमेरिका में निपटा दिया गया है । और, अगर अभी वो नहीं भी निपटा है तो भी चिंता की कोई बात नहीं क्योंकि नहीं निपटा है तो भी जल्द ही निपटा दिया जाएगा ।अब बात आती है कि चलो, कालिस्तानी नेताओं को तो निपटा दिये लेकिन पंजाब में उनके समर्थकों का क्या ? तो, इसका सीधा सा जबाब है कि समर्थकों का कुछ नहीं क्योंकि, पंजाब में कालिस्तान के जितने समर्थक हैं उससे ज्यादा सिख देशभक्त हैं । ऐसे समर्थक कुछेक मुट्ठी भर लोग हैं जो अपने नेताओं का हश्र देखकर खुद ही सुधर जाएंगे...! और, अमृतपाल जैसे हार्डकोर समर्थक को डंडे के जोर पर सुधार दिया जायेगा । वैसे भी जड़ खत्म हो जाने के उपरांत पोषण के अभाव में धीरे धीरे उसके सारे पत्ते सूख जाते हैं । ये प्रकृति का नियम है।



पंकज कुमार मिश्रा

आवश्यकता आज की .... राजनीति में प्रवेश के लिए भी हो कॉमन पोलिटिकल टेस्ट और इंडियन पोलिटिकल सर्विस जैसी परीक्षा

क्यों न देश में हर तरह के चुनाव लड़ने के लिए किसी परीक्षा का आयोजन किया जाये और सरकारी नौकरी की तरह राजनीति में प्रवेश के लिए उनके चरित्र का भली– भांति सत्यापन किया जाये? छोटे स्तर पर कॉमन पोलिटिकल टेस्ट और सांसदों के लिए इंडियन पोलिटिकल सर्विस के एग्जाम रखने में में हर्ज क्या है? आखिर सरकारी नौकरी और राजनीति है तो देश सेवा ही? राजनेताओं को विशेष अधिकार क्यों दिए जाने चाहिए? क्या आरोप पत्र दाखिल व्यक्ति आईएएस अधिकारी बन सकता है? क्या वह कोई सिविल सेवा पद संभाल सकता है? तो फिर राजनेताओं को यह अनुचित विशेषाधिकार क्यों दिया जाना चाहिए जो हमारे लोकतंत्र की मूल भावना के विरुद्ध है? इस मामले में परिवर्तन केवल संसद द्वारा ही लाया जा सकता है। तभी राजनीति का बढ़ता अपराधीकरण ठहर सकता है।

राजनीति का अपराधीकरण एक ऐसी स्थिति है जहां राजनीति में ही अपराधियों की अच्छी–खासी उपस्थिति हो जाती है। राजनीति के अपराधीकरण के कारण बड़ी संख्या में अपराधी संसद और राज्य विधानसभाओं के चुनावों में भाग ले रहे हैं और लड़ रहे हैं। जब अपराधी निर्वाचित प्रतिनिधि बन जाते हैं और कानून निर्माता बन जाते हैं, तो वे लोकतांत्रिक व्यवस्था के कामकाज के लिए एक गंभीर खतरा पैदा करते हैं। एडीआर के आंकड़ों के अनुसार, भारत में संसद के लिए चुने गए आपराधिक आरोपों वाले उम्मीदवारों की संख्या 2004 के बाद से बढ़ रही है। 2004 में, 24þ सांसदों पर आपराधिक मामले लंबित थे, जो 2019 में बढ़कर 43þ हो गए। लोकसभा चुनाव में 159 सांसदों ने अपने ि खलाफ गंभीर आपराधिक मामले घोषित किए थे, जिनमें बलात्कार, हत्या, हत्या का प्रयास, अपहरण और महिला. ओं के खिलाफ अपराध शामिल थे।

राजनेताओं को विशेष अधिकार क्यों दिए जाने चाहिए? क्या आरोप पत्र दाखिल व्यक्ति आईएएस अधिकारी बन सकता है? क्या वह कोई सिविल सेवा पद संभाल सकता है? तो फिर राजनेताओं को यह अनुचित विशेषाधिकार क्यों दिया जाना चाहिए जो हमारे लोकतंत्र की मूल भावना के विरुद्ध है? इस मामले में परिवर्तन केवल संसद द्वारा ही लाया जा सकता है। चुनाव आयोग को दंतहीन संस्था में बदल दिया गया है। केवल राजनीतिक इच्छाशक्ति ही बदलाव ला सकती है।" हाल ही में प्रकाशित एक रिपोर्ट के अनुसार, हाल ही में हुए कर्नाटक चुनावों में भाग लेने वाले कांग्रेस, भाजपा और जद (एस) के लगभग 45 प्रतिशत उम्मीदवारों के खिलाफ आपराधिक मामले दर्ज थे। चिंताजनक बात यह है कि इनमें से लगभग 30 प्रतिशत उम्मीदवारों पर बलात्कार और हत्या सहित गंभीर अप. राधों का आरोप था। भारत उन कुछ देशों में से एक है जहां अपराधियों को चुनावों में स्वतंत्र रूप से भाग लेने और विजेताओं के रूप में उभरने की अनुमति है।

आइए संयुक्त राज्य अमेरिका का उदाहरण लें। अगर किसी पर हत्या या बलात्कार का मामला है, तो उन्हें राजनीतिक टिकट के लिए कभी भी विचार नहीं किया जाएगा। ऐसे व्यक्तियों को चुनाव लड़ने से बाहर कर दिया जाएगा। हालाँकि, भारत में ऐसा नहीं है।

यह हमारी लोकतांत्रिक प्रक्रिया के लिए गंभीर खतरा है। अपराधियों वाला लोकतंत्र स्वस्थ लोकतंत्र नहीं है. राजनीति के अपराधीकरण के मुद्दे के बारे में लोगों के बीच जागरूकता बढ़ाना महत्वपूर्ण है। उन्हें यह समझने की जरूरत है कि अगर वे ऐसे व्यक्तियों को वोट देते हैं, तो वे न केवल देश को बल्कि खुद को भी नुकसान पहुंचा रहे हैं। उदाहरण के लिए, यदि आप आर्थिक रूप से वंचित पृष्ठभूमि के व्यक्ति हैं और आप ऐसे उम्मीदवा. रों को वोट देते हैं, तो आपके बच्चों की शिक्षा प्रभावित होगी क्योंकि स्कूल ठीक से नहीं चलेंगे। इसी तरह, जब आपको चिकित्सा सहायता की आवश्यकता हो, इन अपराधियों द्वारा किए गए बड़े पैमाने पर भ्रष्टाचार के कारण अस्पताल प्रभावी ढंग से काम नहीं करेंगे। आप बुनियादी सुविधाओं और सेवाओं से वंचित रह जाएंगे।

भारत के सर्वोच्च न्यायालय के वरिष्ठ अधिवक्ता गोपाल शंकरनारायणन के अनुसार, कई राजनेता कानून निर्माताओं के रूप में उनके पास मौजूद महत्वपूर्ण शक्ति और प्रभाव से अच्छी तरह परिचित हैं। वे मानते हैं कि उनके पद उन्हें न केवल उन कानूनों को अवरुद्ध करने की क्षमता प्रदान करते हैं जो उन्हें जवाबदेह ठहरा सकते हैं, बल्कि सरकारी अधिकारियों पर प्रभाव डालने की भी क्षमता प्रदान करते हैं, यह सुनिश्चित करते हुए कि उनके खिलाफ मामले दर्ज नहीं किए जाते हैं और वे सुरक्षित रहते हैं। अपराधियों और राजनेताओं के बीच बढ़ती सांठगांठ से भय और हिंसा का उपयोग करके मतदाताओं को डराया जाता है। अपराधी वोट खरीदने और मुफ्तखोरी की संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए नाजायज खर्च का सहारा लेते हैं। आपराधिक राजनेता नौकरशाहों की पोस्टिंग और ट्रांसफर में अपने प्रभाव का इस्तेमाल करते हैं और इस तरह राज्य के शासन को प्रभावित करते हैं। वे जाति, वर्ग और धर्म के आधार पर समाज में विभाजन का फायदा उठाते हैं और खुद को अपने समुदायों के रक्षक के रूप में चित्रित करते हैं। इस प्रकार वे राष्ट्र के सामाजिक ताने–बाने को नुकसान पहुंचाते हैं।

राजनेता के रूप में अपराधी प्रशिक्षित सांसद नहीं होते हैं और अक्सर संसद और राज्य विधानसभा में व्यवधान पैदा करने के लिए असंसदीय प्रथाओं का सहारा लेते हैं जो प्रतिनिधि संस्था के कामकाज को प्रभावित करते हैं। चूंकि आपराधिक अतीत वाले राजनेता मंत्री और कानून निर्माता बन जाते हैं, इसलिए राज्य एजेंसियों के लिए उन पर मुकदमा चलाना मुश्किल हो जाता है, जिससे न्यायपालिका में आपराधिक मामलों की संख्या बढ़ जाती है। इससे धन और बाहुबल पर अंकुश लगेगा और गंभीर उम्मीदवारों को चुनाव लड़ने में मदद मिलेगी। अब चुनावी प्रक्रिया के नियमन में चुनाव आयोग की भूमिका को मजबूत करने और आपराधिक रिकॉर्ड वाले उम्मीदवारों को अयोग्य घोषित करने के लिए एक रूपरे खा स्थापित करने का समय आ गया है।

संसद को एक मजबूत कानूनी ढांचा स्थापित करना चाहिए जो सभी राजनीतिक दलों को उन व्यक्तियों की सदस्यता रद्द करने का आदेश दे जिनके खिलाफ जघ ान्य और गंभीर अपराधों में आरोप तय किए गए थे और ऐसे व्यक्तियों को संसद और राज्य विधानसभाओं के चुनावों में खड़ा नहीं किया जाए। मतदाताओं को इसके बारे में जागरूक होना चाहिए चुनावों में धन और बाहुबल का दुरुपयोग। उन्हें उपहार, प्रलोभन और मुफ्त उपहार स्वीकार करने से बचना चाहिए और उम्मीदवार के खिलाफ नाराजगी व्यक्त करने के लिए नोटा के विकल्प का उपयोग करना चाहिए।

लोकतांत्रिक प्रणालियों की अखंडता की रक्षा करने और नैतिक और जिम्मेदार राजनीतिक नेतृत्व को आगे बढ़ाने के लिए, राजनीति के अपराधीकरण का मुकाबला करने के लिए कानूनी, संस्थागत और सामाजिक उपायों को शामिल करते हुए एक बहुआयामी रणनीति की आवश्यकता है।

क्यों न देश में हर तरह के चुनाव लड़ने के लिए किसी परीक्षा का आयोजन किया जाये और सरकारी नौकरी की तरह राजनीति में प्रवेश के लिए उनके चरित्र का भली भांति सत्यापन किया जाये? छोटे स्तर पर कॉमन पोलिटिकल टेस्ट और सांसदों के लिए इंडियन पोलि. टिकल सर्विस के एग्जाम रखने में में हर्ज क्या है? आखिर सरकारी नौकरी और राजनीति है तो देश सेवा ही? तभी राजनीति का बढ़ता अप. राधीकरण ठहर सकता है।



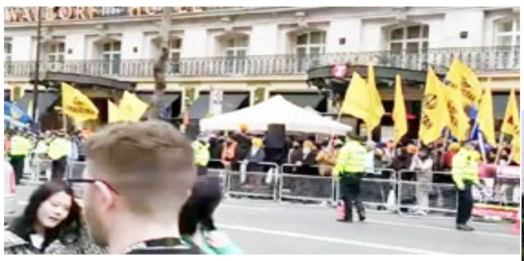
डॉ. सत्यवान सौरभ,

कनाडा में खालिस्तान समर्थक के प्रदर्शन

भारत का रुख सख्त, राजनयिक किया तलब

उपराष्ट्रपति की एक मुहिम के तहत बच्चे ज्यादा से ज्यादा समसामयिक विषयों के बारे में रुचि रखें और देश से जुड़े इसको जाने । इसी कड़ी में राज्यसभा सचिवालय के अधिकारियों के बच्चों ने प्रधानमंत्री संग्रहालय का भ्रमण किया और देश के प्रधानमंत्रियों के बारे में जानकारी ली।





नई दिल्ली। भारत ने अपने राजनयिक मिशन के खिलाफ खालिस्तानी समर्थक अतिवादी तत्वों के हालिया कृत्यों के मद्देनजर कनाडा के उच्चायुक्त कैमरून मैके को तलब किया है। साथ ही इन घटनाओं पर गहरी चिंता व्यक्त की है। विदेश मंत्रालय ने एक बयान में बताया कि उसने शनिवार को मैके को तलब किया और स्पष्टीकरण मांगा कि पुलिस की मौजूदगी के बावजूद 'अलगाववादी एवं अतिवादी तत्वों' को भारत के राजनयिक मिशन और वाणिज्य दूतावासों की सुरक्षा का उल्लंघन कैसे करने दिया गया।

कनाडा में खालिस्तान समर्थकों के प्रदर्शन को लेकर भारत ने सख्त रुख अपनाया है। भारत ने अपने राजनयिक मिशन के खिलाफ हालिया घटनाक्रम को लेकर कनाडा के उच्चायुक्त को तलब किया। साथ ही विदेश मंत्रालय की तरफ से सफाई भी मांगी गई कि भारत के राजनयिक मिशन की सुरक्षा में चूक कैसे हो गई।

वियना संधि के तहत उसके दायित्वों की याद दिलाई

खालिस्तान समर्थकों के हिंसक प्रदर्शन के बाद कनाडा में भारत के उच्चायुक्त संजय कुमार वर्मा ब्रिटिश कोलंबिया प्रांत में गत रविवार को आयोजित कार्यक्रम में शामिल नहीं हो पाए थे। विरोध प्रदर्शन की रिपोर्टिंग करने के लिए कार्यक्रम स्थल पर मौजूद भारतीय मूल के पत्रकार समीर कौशल पर भी प्रदर्शनकारियों ने हमला किया था। मंत्रालय ने बयान में कहा कि कनाडा को वियना संधि के तहत उसके दायित्वों की याद दिलाई गई और ऐसे लोगों को गिरफ्तार करने तथा उन पर मुकदमा चलाने के लिए कहा गया जिनकी पहचान इस तरह के कृत्यों में शामिल होने वाले व्यक्तियों के तौर पर पहले ही की जा चुकी है।

खालिस्तान समर्थकों की भारत विरोधी गतिविधियों में वृद्धि

मंत्रालय ने आशा व्यक्त की कि कनाडा सरकार भारत के राजनयिकों और उसके राजनयिक परिसरों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक सभी कदम उठाएगी ताकि वे अपने सामान्य राजनयिक कार्यों को पूरा कर सकें। कनाडा में हाल में खालिस्तान समर्थकों की भारत विरोधी गतिविधियों में वृद्धि देखी गई है। इन तत्वों ने कुछ हिंदू मंदिरों में तोड़फोड़ भी की है। इस महीने की शुरुआत में, खालिस्तान समर्थकों ने लंदन में भारतीय उच्चायोग पर हमला किया था और सैन फ्रांसिस्को में भारतीय वाणिज्य दूतावास में तोड़फोड़ की थी।

राज्यसभा सभापति जगदीप धनखड़ की अनूठी पहल

किसी भी देश विरासत की भव्यता भावी पीढ़ी के लिए इतिहास के पन्नों को खुलती इस दिशा में अगर देश के भविष्य ज्ञानी बच्चों को शामिल किया जाता है तो यह अपने आप में खास बन जाता है।





नई दिल्ली। राज्य सभा सभापति जल्दी फोन कर अपना पद ग्रहण करते हुए एक बात के संकेत दिए थे कि राज्यसभा सचिवालय में कामकाज के साथ–साथ पारिवारिक रिश्तो को मजबूती प्रदान करने पर भी जोर दिया जाएगा। इस विषय में उन्होंने विभिन्न अवसरों पर राज्यसभा सचिवालय के अधिकारियों और कर्मचारियों के साथ मुलाकात की और इस बात पर बल दिया कि सचिवालय में सभी लोग मिलकर एक बेहतर स्थिति में काम करें और परिवार को एक आदर्श के रूप में प्रस्तुत करें। उन्होंने कहा कि आने वाले समय में परिवार को खुश रखो परिवार को स्वस्थ रखो। इस बात की याद यहां उपस्थित बच्चे बच्चियां बुजुर्ग समय–समय पर दिलाएंगे। देश का भ्रमण कीजिए एक साथ कीजिए भारत को देखिए। देश के बाहर देखने को बहुत कुछ और जो भारत में है वह अन्यत्र कहीं नहीं है संगठित तरीके से देखिये।

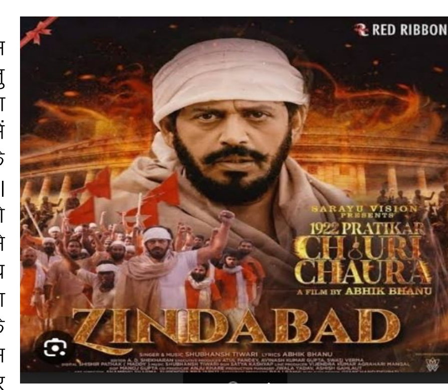
बताते चलें कि 27 जून 2023 को राज्यसभा सचिवालय के द्वारा कर्मचारियों व अधिकारियों के परिजनों को नई दिल्ली स्थित प्रधानमंत्री संग्रहालय और लाइट एंड साउंड शो दिखाया गया। कार्यक्रम की पूरी व्यवस्था कैपेसिटी बिल्डिंग के द्वारा की गई थी और इससे राज्य सरकार कर्मचारी मनोरंजन क्लब द्वारा क्रियान्वित किया गया। झांसी संग्रहालय में अतीत की सभी प्रधानमंत्री गैलरी है और इसमें उनसे जुड़ी जानकारियों तथा चीजों को रखा गया है। इस प्रधानमंत्री संग्रहालय का उद्घाटन प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने किया था। नई दिल्ली के तीन मूर्ति 15.600 स्क्वायर मीटर में 306 करोड़ रुपये की लागत से बना प्रधानमंत्री संग्रहालय देश के प्रधानमंत्रियों के नाम है जिसमें देश के प्रत्येक प्रधानमंत्री को समर्पित 14 गैलरी देखने को मिलेंगे प्रत्येक गैलरी को बेहतरीन पर श्रवण के साथ प्रधानमंत्री के जीवन और कार्यकाल के विषय में पूरी जानकारी देती है। आपको उनके शुरुआती जीवन आर्थिक कैरियर और चुनौतियों की झलक देखने को मिल जाएगी जो उनके जीवन में आई। सभी प्रधानमंत्रियों की सफलताओं आपको भी यहां दर्शाया गया है। अधिकारियों के बच्चों ने संग्रहालय की गैलरी में आनंद लिया।इस संग्रहालय के माध्यम से देश की भावी पीढ़ी को देश के गौरवशाली अतीत को जोड़ने का मौका मिला।

भारत के पार्लियामेंट्री फ्रेंडशिप ग्रुप से भी मिलेंगे

विदेश मंत्री एस जयशंकर तंजानिया दौरे के दौरान भारत के पार्लियामेंट्री फ्रेंडशिप ग्रुप के सदस्यों से मिलेंगे और भारत–तंजानिया बिजनेस मीट का भी उद्घाटन करेंगे। मीटिंग के दौरान वह भारतीय प्रवासियों से बातचीत करने के साथ दार–ए–सलाम में स्वामी विवेकानंद की प्रतिमा का इनॉगरेशन करेंगे। विदेश मंत्रालय से मिली जानकारी के अनुसार भारत और तंजानिया के बीच काफी क्लोज और मैत्रीपूर्ण संबंध है। विदेश मंत्री की तंजानिया यात्रा से दोनों देशों के बीच संबंध और मजबूत होंगे।



"1922 प्रतिकार चौरी चौरा"



इन दिनों पूरे देश में शान से चल रही फिल्म "1922 प्रतिकार चौरी चौरा "इस फिल्म की कथावस्तु देशभक्ति से ओतप्रोत है। जिसकी कहानी चौरी चौरा हत्या कांड पर आधारित है। फिल्म में लीड रोल में आप देखेंगे बॉलीवुड के सुपर स्टार व गोरखपुर के माननीय सांसद अभिनेता "रवि किशन जी "को। फिल्म की कहानी में असहयोग आंदोलन आदि को प्राथमिकता दी गई है। ये फिल्म पूरी तरह से देशभक्ति है,, स्वतंत्रता संग्राम के तमाम रहस्य को यह फिल्म उजागर कर रही है,जो अबतक छुपाया गया था।फिल्म में तमाम किरदार के रूप में यहां के लोकल आर्टिस्ट लोगों ने ही निभाए जो इस फिल्म को मूल रूप से वास्तविक बनाने में काफी कारगर साबित हुई है।

इस फिल्म की शूटिंग भी पूर्णरूप से गोरखपुर में की गई है,,जिससे इस फिल्म में वास्तविक रूप देखने को मिल रहा है। फिल्म में काम करने वाले अधिकतर अभिनेता गोरखपुर के आस पास के ही हैं। फिल्म में चंद्रप्रकाश मिश्र पार्थ,चंदू ,त्रिशुराज राय, सुमितेंद्र कुमार, एक्टर राहुल राही,रितेश , आदि ने निभाए हैं। इस फिल्म के लोकेशन सभी वास्तविक हैं,साथ ही साथ कमाल की कास्टिंग हुई। रूप सज्जा भी काफी रियलिटी से मेल खा रहा है,, फिल्म की सिनेमेटिक आइडिया भी काफी अच्छे हैं। फिल्म में जो गीत हैं , वो दर्शकों में रोचकता का प्रसार करते हैं, कहानी के अनुरूप संगीत भी है। फिल्म के डायलॉग काफी हद तक तार्किक दृष्टि से उच्च कोटि के हैं। जितने अच्छे डायलॉग हैं,उतने ही ईमानदारी से दर्शकों ने फिल्म में उसे बोलकर ,डायलॉग लिखने वाले की मेहनत को सार्थक किए हैं। फिल्म की सेट डिजाइनिंग काफी अच्छी है ,साथ ही साथ रूप सज्जा ड्रेस डिजाइन भी काफी सराहनीय है समय काल से मैच खाती है। सभी अभिनेता अपना सर्वश्रेष्ठ दिये हैं। कुल मिलाके बहुत दिनों के बाद बॉलीवुड ने एक अच्छी साफ सुथरी मूवी दिया है ,जिसे दर्शक विथफैमिली देख सकते हैं। जिन दर्शको देशभक्ति फिल्म नही पसंद उन्हे शायद अच्छी न लगे बहरहाल बाकी सभी दर्शकों को यह फिल्म काफी अच्छी लगेगी ।



प्रस्तुतिः नीरज कुमार सिंह
देवरिया ,उत्तर प्रदेश





गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाएं: किसी भी समाज और देश की प्रगति के लिए बुनियादी आवश्यकता है। कर्नाटक के मुदेनाहल्ली श्री सत्य साईं विश्वविद्यालय के दूसरे दीक्षांत समारोह को संबोधित करते हुए राष्ट्रपति पोखरी मुर्मू ने कहा कि प्रत्येक नागरिक को उनके आर्थिक समस्याओं के बावजूद सस्ती और विश्वसनीय स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध हो यह सुनिश्चित करना हमारी सामूहिक जिम्मेदारी है। उन्होंने सिविल सर्विसेज परीक्षा में बेटियों के बेहतर प्रदर्शन की तारीफ करते हुए कहा कि यूपीएससी में सर्वोच्च स्थान हमारी बेटियों ने प्राप्त किए हैं यह इस बात के संकेत हैं कि बराबर अवसर मिलने पर हमारी बेटियां बेटों से भी अच्छा प्रदर्शन करती हैं। भारत में हो रहे बदलाव और देश के सुनहरे भविष्य की झलक है इससे पूर्व कर्नाटक के राज्यपाल थावरचंद गहलोत और मुख्यमंत्री सिद्धरमैया ने बेंगलुरु पहुंचने पर द्रौपदी मुरमू का पुष्पगुच्छ प्रदान कर स्वागत किया।



राष्ट्रहित से जुड़े अन्य मुद्दों पर अपना दृष्टिकोण साफ करें

प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदी ने भोपाल में एक सभा में विपक्षी दलों की एकता के प्रयासों पर जमकर चुटकियां ली। उन्होंने कहा कि इनके घोटाले की लिस्ट इतनी लम्बी है कि कोर्ट भी थक गयी है। प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी ने भ्रष्टाचार को लेकर कहा कि कुछ लोग सिर्फ अपने ही दल के लिए जीते हैं, दल का ही भला करना चाहते हैं और वह ये सब इसलिए करते हैं क्योंकि उन्हें भ्रष्टाचार, कमीशन और कट मनी का हिस्सा मिलता है। उन्होंने जो रास्ता चुना है, उसमें ज्यादा मेहनत नहीं करनी पड़ती। विपक्षी दलों की पटना में हुई बैठक को लेकर मोदी ने कहा कि आजकल बार–बार एक शब्द आता है– गारंटी। ये सारे विपक्षी दल भ्रष्टाचार की गारंटी हैं। ये गारंटी हैं लाखों–करोड़ रुपयों के घोटालों की। उन्होंने कहा कि कुछ दिन पहले इनका एक फोटो शॉप कार्यक्रम हुआ। उस फोटो में जो लोग हैं उन सबका मिलकर टोटल करेंगे तो ये सारे मिलकर कमसे कम 20 लाख करोड़ रुपये के घोटाले की गारंटी हैं। मोदी ने बिना किसी ठोस कार्यक्रम के समाप्त हुई विपक्षी दलों की बैठक पर प्रहार करते हुए कहा कि अकेले कांग्रेस का ही लाखों करोड़ों का घोटाला है। इन पार्टियों के पास घोटालों का ही अनुभव है और इसीलिए इनकी यदि कोई गारंटी है तो वह है– घोटालों की गारंटी। यदि उनकी घोटाले की गारंटी है तो मोदी की भी एक गारंटी है, हर घोटालेबाज पर कारवाई की गारंटी। आश्चर्य की बात यह है कि केन्द्र सरकार के खिलाफ ईडी और सीबीआई के दुरुपयोग का आरोप लगाने वाले विपक्षी दलों में से किसी ने भी प्रधानमंत्री के आरोपों का खंडन तक नहीं किया। विपक्षी दल ईडी की काररवाई के विरोध में सुप्रीम कोर्ट से पहले ही मात खा चुके हैं। सुप्रीम कोर्ट ने ईडी की काररवाई के मामले में दखल देने से इनकार कर दिया था।

प्रधानमंत्री मोदी के विपक्ष पर लगाये भ्रष्टाचार के आरोपों को बल इस बात से मिलता है कि विपक्षी नेताओं पर लगे भ्रष्टाचार के ज्यादातर मामलों में अदालत ने कोई राहत नहीं दी है। इसी कड़ी में एक मामला तमिलनाडु के मंत्री सेंथिल बालाजी का भी शामिल हो गया है। प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने नौकरीके बदले नकदी मामले में मंत्री बालाजी को 14 जून को गिरफ्तार किया था। चेन्नई सत्र न्यायालय ने न्यायिक हिरासत 12 जुलाई तक बढ़ाने का आदेश दिया है। इसके खिलाफ सुप्रीम कोर्ट में याचिका दायर की गयी थी, लेकिन सुप्रीम कोर्ट ने उच्च न्यायालय के फैसले में दखल देने से मना कर दिया। गौरतलब है कि बालाजी पर रिश्वत लेकर परिवहन विभाग में नौकरी देने का आरोप है। विपक्ष के लिए बेशक भ्रष्टाचार मिटाने का मुद्दा प्रमुख न हो, परन्तु इस मामले में भारत की स्थिति भयावह है। करप्शन परसेप्शन इंडेक्स 2022 की 180 देशों की सूची में भारत को 40 अंकों के साथ 85 वें पायदान पर रखा गया। दुनिया भर के देशों में करप्शन के स्तर को मापने वाला यह इंडेक्स हर साल संघटन ट्रान्सपैरेंसी इंटरनेशनल द्वारा जारी किया जाता है। निश्चित तौरपर राज्यों में व्याप्त भ्रष्टाचार के कारण ही भारत की यह स्थिति बनी है। विशेषकर विपक्षी दलों की सत्ता वाले राज्यों में भारी भ्रष्टाचार व्याप्त है। यह विपक्षी दलों के लिए कभी भी चिन्ता का विषय नहीं बना।

इंडियन करप्शन सर्वे 2019 की रिपोर्ट के मुताबिक सबसे भ्रष्ट राज्यों की सूची में राजस्थान नंबर–एक पर रहा। भ्रष्टाचार की इस लिस्ट में बिहार दूसरे नंबरपर रहा। बिहार के सर्वे में 75 फीसदी लोगों ने कहा कि उन्हें काम करवाने के लिए रिश्वत देनी पड़ी।50 फीसदी लोगों ने कहा कि उन्हें अधिकारियों को कई बार पैसे देने पड़े। तकरीबन 25 फीसदी लोगों ने कहा कि केवल उन्हें एक या दो बार घूस देनी पड़ी।

झारखंड देश में भ्रष्टाचारी राज्यों की सूचीमें तीसरे पायदानपर आया। 74 फीसदी लोगों ने कहा कि उन्हें अपना काम करवाने के लिए रिश्वत देनी पड़ी। उत्तर प्रदेश देश में भ्रष्टाचार में चौथे स्थान पर है। प्रधानमंत्री मोदी के लगाये भ्रष्टाचार के आरोपों का कांग्रेस जवाबतक नहीं दे सकी। इसका प्रमाण राजस्थान है। भ्रष्टाचार के मुद्दे पर कांग्रेस की हालत का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि राजस्थान में भाजपा ने प्रमाण सहित भ्रष्टाचार के मामले पेश किये हैं। इसके बावजूद मुख्य मंत्री अशोक गहलोत सहित कांग्रेस के किसी भी वरिष्ठ नेताने इसका प्रतिवाद तक करना उचित नहीं समझा। भाजपा के राज्यसभा सांसद किरोड़ी लाल मीणा द्वारा पाँच हजार करोड़ रुपये के कथित

घोटाले को लेकर सूचना प्रौद्योगिकी और संचार विभाग के खिलाफ प्रवर्तन निदेशालय को शिकायत दर्ज कराने के बाद अब मुख्य मंत्री अशोक गहलोत के बेटे वैभव गहलोत के खिलाफ शिकायत दर्ज करायी है। सांसद मीणा ने राजस्थान में जल–जीवन मिशन के तहत पीएचईडी मंत्री महेश जोशी और पीएचईडी के अतिरिक्त मुख्य सचिव सुबोध अग्रवालके खिलाफ 20 हजार करोड रुपये के घोटाले का गम्भीर आरोप लगाया है। भाजपा सांसद डा. किरोड़ी लाल मीणाने मंत्री धारीवाल पर 45 करोड़ की जमीन कौड़ियों के भाव बांटने के आरोप लगाये। राष्ट्रीय लोकतांत्रिक पार्टी प्रमुख एवं नागौर के सांसद हनुमान बेनीवाल राजस्थान में बजरी माफिया के खिलाफ मोर्चा खोले हुए हैं। पूर्व उप मुख्यमंत्री सचिन पायलट मुख्य मंत्री अशोक गहलोत पर पहले ही भ्रष्टाचार के बचाव का बड़ा आरोप लगा चुके हैं। पायलट ने गहलोत सरकार पर भाजपा की पूर्व मुख्यमंत्री वसुंधरा राजेके कार्यकाल में 45 हजार करोड़ रुपये के घोटाले का आरोप लगाया था। यह निश्चित है कि जबतक विपक्षी दल भ्रष्टाचार सहित राष्ट्रहित से जुड़े अन्य मुद्दों पर अपना दृष्टिकोण साफ नहीं करेंगे तबतक एकता होने के बावजूद देश के लोगों का भरोसा जीतना आसान नहीं है। भाजपा विपक्षी दलों को लगातार निशाने पर लेती रहेगी।



श्रावण मास के शुरू होते ही घरों से निकला बोलबम के साथ कांवड़ियों का जत्था



संजय वर्मा"दृष्टि" को मिला काव्य विभूति सम्मान

सोशल मीडिया पर माँ शारदे काव्य मंच परिवार द्वारा दिनांक 25–6–2023 को आयोजित काव्य प्रतियोगिता में मनावर जिला धार मप्र के संजय वर्मा "दृष्टि" जिन्होंने अपने खास अल्फाजों को प्रदत्त विषय धड़कन पर अपनी उत्कृष्ट रचना को मंच पर सांझा किया जाकर सर्वश्रेष्ठ काव्य विभूति सम्मान प्राप्त किया। सम्मान पत्र मंच के संस्थापक–किशोर सैनी, अध्यक्ष–ओंकारसिंह चौहान, संरक्षक–कवि महेंद्र भट्ट ,सचिव–शेष मणि शर्मा,उपाध्यक्ष–त्रिलोक चन्द्र शर्मा त्रिवेशसंरक्षक रामेंद्र कुमार शर्मा ,सचिव शेष मणि शर्मा, आयोजिका शिवा सिंहल द्वारा प्रदान किया जाकर उज्ज्वल भविष्य की कामना की।संजय वर्मा "दृष्टि " को अब तक 376राष्ट्रीय अंतरराष्ट्रीय सम्मान से सम्मानित किया जा चुका है।48 वर्षो से देश विदेश की पत्र पत्रिकाओं में निरंतर इनकी रचनाओं का प्रकाशन होता हो रहा है।इनका नाम वर्ल्ड बुक ऑफ रिकार्ड में दर्ज है।



श्रावण मास के शुरू होते ही भोले बाबा का श्रृंगार शुरू हो गया

श्री राम

श्री राम ही शक्ति के दाता
दर्शन मात्र से सारे सुख पाता।
जब ध्यान लगाएं हरदम तुझमें
पुनीत विचार सब समाए मुझमे।
श्री राम की छवि बड़ी निराली
कण –कण में समाई खुशहाली।
सारा जग होता आप से ही रोशन
प्राणी पाते धन धान्य और पोषण।
सांस सांस में है बसा नाम तुम्हारा
श्री राम ही तो है बस हम सबका सहारा।
श्री राम सारा सारा जग तो है तुम्हारा
जग में तुम बिन कोई नही है हमारा।
सनातन धर्म के आप रखवाले
बागेश्वर धाम संदेश दे रहे आशीर्वाद वाले द्य
पूजन करो और बोलो जय श्रीराम
दुःख सारे दूर होंगे मिलेगा सुख आराम।

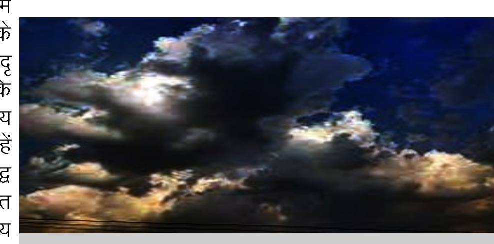
संजय वर्मा "दृष्टि"
मनावर(धार)मप्र

'अध्यात्म–विद्या और भारतीय दर्शन के बिना विश्व अनाथ हो जाएगा'



स्वामी विवेकानंद का जन्म 12 जनवरी सन 1863 को हुआ। उनका घर का नाम नरेंद्र दत्त था। उनके पिता विश्वनाथ दत्त पाश्चात्य सभ्यता में विश्वास रखते थे। वे अपने पुत्र नरेंद्र को भी अंगरेजी पढ़ाकर पाश्चात्य सभ्यता के ढंग पर ही चलाना चाहते थे। नरेंद्र की बुद्धि बचपन से बड़ी तीव्र थी और परमात्मा को पाने की लालसा भी प्रबल थी। इस हेतु वे पहले ब्रह्म समाज में गए किंतु वहां उनके चित्त को संतोष नहीं हुआ। सन 1884 में विश्वनाथ दत्त की मृत्यु हो गई। घर का भार नरेंद्र पर पड़ा। घर की दशा बहुत खराब थी। कुशल यही थी कि नरेंद्र का विवाह नहीं हुआ था। अत्यंत गरीबी में भी नरेंद्र बड़े अतिथि–सेवी थे। स्वयं भूखे रहकर अतिथि को भोजन कराते, स्वयं बाहर वर्षा में रातभर भीगते–ठिठुरते पड़े रहते और अतिथि को अपने बिस्तर पर सुला देते।

रामकृष्ण परमहंस की प्रशंसा सुनकर नरेंद्र उनके पास पहले तो तर्क करने के विचार से ही गए थे किंतु परमहंस जी ने देखते ही पहचान लिया कि ये तो वही शिष्य है जिसका उन्हें कई दिनों से इंतजार है। परमहंस जी की कृपा से इनको आत्म–साक्षात्कार हुआ फलस्वरूप नरेंद्र परमहंस जी के शिष्यों में प्रमुख हो गए। संन्यास लेने के बाद इनका नाम विवेकानंद हुआ। स्वामी विवेकानन्द अपना जीवन अपने गुरुदेव स्वामी रामकृष्ण परमहंस को समर्पित कर चुके थे। गुरुदेव के शरीर–त्याग के दिनों में अपने घर और कुटुंब की नाजुक हालत की परवाह किए बिना, स्वयं के भोजन की परवाह किए बिना गुरु सेवा में सतत हाजिर रहे। गुरुदेव का शरीर अत्यंत रुग्ण हो गया था। कैंसर के कारण गले में से थूंक, रक्त, कफ आदि निकलता था। इन सबकी सफाई वे खूब ध्यान से करते थे। एक बार किसी ने गुरुदेव की सेवा में घृणा और लापरवाही दिखाई तथा घृणा से नाक भौंहें सिकोड़ीं। यह देखकर विवेकानंद को गुस्सा आ गया। उस गुरुभाई को पाठ पढ़ाते हुए और गुरुदेव की प्रत्येक वस्तु के प्रति प्रेम दर्शाते हुए उनके बिस्तर के पास रक्त, कफ आदि से भरी थूकदानी उठाकर पूरी पी गए। गुरु के प्रति ऐसी अनन्य भक्ति और निष्ठा के प्रताप से ही वे अपने गुरु के शरीर और उनके दिव्यतम आदर्शों की उत्तम सेवा कर सके। गुरुदेव को वे समझ सके, स्वयं के अस्तित्व को गुरुदेव के स्वरूप में विलीन कर सके। समग्र विश्व में भारत के अमूल्य आध्यात्मिक खजाने की महक फैला सके। उनके इस महान व्यक्तित्व की नींव में थी ऐसी गुरुभक्ति, गुरुसेवा और गुरु के प्रति अनन्य निष्ठा। 25 वर्ष की अवस्था में नरेंद्र दत्त ने गेरुआ वस्त्र पहन लिए। तत्पश्चात उन्होंने पैदल ही पूरे भारतवर्ष की यात्रा की। सन 1893 में शिकागो (अमेरिका) में विश्व धर्म परिषद् हो रही थी। स्वामी विवेकानंदजी उसमें भारत के प्रतिनिधि के रूप से पहुंचे। योरप–अमेरिका के लोग उस समय पराधीन भारतवासियों को बहुत हीन दृष्टि से देखते थे। वहां लोगों ने बहुत प्रयत्न किया कि स्वामी विवेकानंद को सर्वधर्म परिषद् में बोलने का समय ही न मिले। एक अमेरिकन प्रोफेसर के प्रयास से उन्हें थोड़ा समय मिला किंतु उनके विचार सुनकर सभी विद्वान चकित हो गए। फिर तो अमेरिका में उनका बहुत स्वागत हुआ। वहां इनके भक्तों का एक बड़ा समुदाय हो गया। तीन वर्ष तक वे अमेरिका रहे और वहां के लोगों को भारतीय तत्वज्ञान की अद्भुत ज्योति प्रदान करते रहे। 'अध्यात्म–विद्या और भारतीय दर्शन के बिना विश्व अनाथ हो जाएगा' यह स्वामी विवेकानंद का दृढ़ विश्वास था। अमेरिका में उन्होंने रामकृष्ण मिशन की अनेक शाखाएं स्थापित कीं। अनेक अमेरिकन विद्वानों ने उनका शिष्यत्व ग्रहण किया। वे सदा अपने को गरीबों का सेवक कहते थे। भारत के गौरव को देश–देशांतरों में उज्ज्वल करने का उन्होंने सदा प्रयत्न किया। 4 जुलाई सन 1902 को उन्होंने देह त्याग किया।



बदली छाई

देखो कैसे बदली छाई।
हवा ने ली अंगड़ाई।
नीला अम्बर लगा गरजने;
दौड़ खूब बिजली लगाई।
बरसने लगा पानी जी भर;
हुई गीली धरती माई।
भीगती हुई चिड़िया रानी;
लौट नीड़ चली आई।
तैर रही कागज की;
नाव गली गली भाई।

टीकेश्वर सिन्हा "गब्दीवाला"
घोटिया–बालोद (छ.ग.)

गुरु का अलग–अलग लोगों के लिए उपयोग

गुरु का पारंपरिक अर्थ है 'वह जिसमें गांभीर्य है'। हाल ही में एक नई शब्द–व्युत्पत्ति लोकप्रिय बन गई है। इसके अनुसार गुरु वह है, जो हमें अंधकार (ग) से प्रकाश (रु) तक ले जाता है। विभिन्न लोग संदर्भानुसार गुरु का अलग–अलग लोगों के लिए उपयोग करते हैं। भागवत पुराण में कृष्ण ने उद्भव को तटस्थ तपस्वी (अवधूत) के चौबीस गुरुओं के बारे में बताया था। इनमें उन्होंने कई तत्वों, पेड़–पौधों, प्राणियों और जीवन के अनुभवों का समावेश किया, जिनसे तटस्थ तपस्वी अर्थात अवधूत को अंतर्दृष्टि मिलती है। इस प्रकार यहां गुरु वह है, जो तपस्वी में अतर्दृष्टि पैदा करता है। लेकिन स्कंद पुराण की गुरु गीता में शिव ने पार्वती को बताया कि गुरु के बिना किसी व्यक्ति के लिए वेद समझना या प्रबुद्ध बनना असंभव है। कृष्ण के अनुसार गुरु वो है, जो मनुष्य की स्वतंत्रता को स्वीकार कर उसे स्वतंत्र बनने में सक्षम बनाता है; शिव के अनुसार हमें गुरु पर निर्भर होना आवश्यक है। भारतीय इतिहास में उपनिषदों और बुद्ध के काल के बाद दोनों तरह के गुरु हुए हैं। बोलचाल की भाषा में गुरु शब्द का कई तरह के लोगों के लिए उपयोग किया जाता है, जैसे अध्यापक, आचार्य, शास्त्री, पंडित, ज्ञानी, भिक्षु, संन्यासी, साधु, मुनि, तपस्वी, योगी, जोगी, सिद्ध, तांत्रिक, पुरोहित आदि। आजकल अधिकतर भारतीय आध्यात्मिक नेता गुरु कहलाते हैं और इसलिए गुरु का यही अर्थ विश्वभर में भी प्रसिद्ध हो गया है। ये नेता सभी सांसारिक बंधनों से मुक्त होने का दावा करते हैं। लेकिन उन पर निर्भर अनुयायियों द्वारा लुटाई गई संपत्ति का भोग भी वे खुशी–खुशी करते हैं। इन अनुयायियों के लिए 'गुरु', भगवान से अधिक महत्वपूर्ण बन जाते हैं। इस बात को समझने में गुरु गीता की अहम भूमिका है।



उसके अनुसार गुरु पिता माता, यहां तक की देवताओं के समान या उनसे भी श्रेष्ठ हैं। इस तरह, गुरु रानी मधुमक्खी जैसे बन जाता है, जिसे अन्य मधुमक्खिर्या सुरक्षित रखती है, क्योंकि रानी के बिना छत से मिलने वाला भीषण चला जाता है। रामायण में वशिष्ठ और विश्वामित्र ऋषियों ने राम के साथ अपना ज्ञान और कौशल बांटा। स्पष्टतया वे शिक्षक की भूमिका निभा रहे थे।

पुराणों के अनुसार बृहस्पति के बिना देव युद्ध नहीं जीत सकते थे और शुक्र के बिना असुर पुनर्जीवित नहीं हो सकते थे। बृहस्पति और शुक्र जादूगर और तांत्रिक प्रतीत होते हैं। ग्रंथों में अत्रि, अगस्त्य और जमदग्नि जैसे गृहस्थ गुरुओं तथा गोरखनाथ जैसे ब्रह्मचारी गुरुओं का उल्लेख है। ब्रह्मचारी गुरुओं ने अपने ब्रह्मचर्य के कारण जादुई शक्तियां अर्जित कीं।
कई लोग अत्रि के पुत्र 'दत्त' या दत्तात्रेय को आदिपुरु मानते हैं। उन्हें चार कुकुर का पीछा करते हुए दिखाया जाता है, जो उनके वैदिक ज्ञान से उत्पन्न आत्मविश्वास का प्रतीक है। संपत्ति के प्रतीक 'गाय' को उनका पीछा करते हुआ दिखाया जाता है। कभी–कभार दत्त को देवताओं से भी श्रेष्ठ माना जाता है।

लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने गुरु पूर्णिमा के अवसर पर देशवासियों को बधाई देते हुए ट्वीट संदेश में उन्होंने कहा–

अज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जनशलाकाया।
चक्षुरुन्मिलितं येन तस्मै श्री गुरुवे नमः।।

अर्थात ज्ञान रूपी ज्योत से भीतर के तम को समाप्त कर जीवन को प्रकाशित कर तथा सन्मार्ग पर चलने को प्रेरित करने वाले सभी गुरुजनों को कोटिशः वंदन।

लघुकथाः जरूरी है

"पच्चीस रुपए प्रति किलो के हिसाब से हफ्ता भर के लिए ही चावल ले आना। घर में एक दाना नहीं है। ये एक सौ पचहत्तर रुपए हैं। पैसा नहीं है जी। इतना ही है।" अपनी पत्नी केकती से पैसे लेकर गोकुल प्रभात प्रोविजन स्टोर्स गया। गोकुल चावल तौलवा रहा था। तभी उसे एक आवाज सुनाई दी। पीछे मुड़कर देखा। उसका बेटा मनीष था। वह कक्षा छठवी का छात्र था। बोला– "पापा !
मेरे लिए तीन कापी ले दो ना पच्चीस–तीस रुपए वाली। बहुत जरुरी है। सर लिवा ही लेना बोले हैं।" कुछ देर तक गोकुल चुप रहा। पिता–पुत्र के बीच कुछ कानाफूसी हुई। फिर गोकुल दुकानदार से बोला– "सेठजी ! पच्चीस रुपए वाली तीन कापी दे दो। सौ रुपए का ही चावल दे दो सेठजी।" तभी मनीष बोला–"सप्ताह भर के लिए चावल भी जरूरी है पाप. ा।" "चलाएँगे बेटा जैसे भी।" मनीष अपने पापा गोकुल से लिपट गया।

टीकेश्वर सिन्हा गब्दीवाला

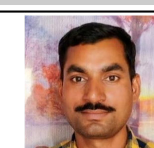
राही जी



ओ मनमौजी राही जी ,
करना नहीं तबाही जी।
लिखने गम जब भी बैठा ,
ख़तम हो गई स्याही जी।
झगड़ा करना यहाँ मना ,
आगे खड़ा सिपाही जी।
लूटपाट की थी जिसने ,
देगा वही गवाही जी।
सुरा पान कहाँ करोगे ,
उसकी यहाँ मनाही जी।

महेंद्र कुमार वर्मा
भोपाल

मैं उड़ती नील गगन में



काश मेरे भी पर होते,
मैं उड़ती नील गगन में।
जी लेती सारी खुशियाँ,
दबी हुई जो अन्तर्मन में।

अठखेलियाँ सूरज दादा संग,
चँदा मामा संग हँसी–ठिठोली।
सैर सपाटे करती दिनभर,
मैं इठलाती नंदन वन में।।

डाली–डाली इतराती,मँडराती
सुवासित फूलों की बगियन में।
नित तितली बन उड़ती रहती ,
बगिया गूंजे भँवरों के गुंजन में।।

झर–झर झरनों के संग–संग,
गुंजित होता नवगीत मन में।
सुरभित फूलों की बगिया हो,
हर्षित मन हो जन–जन में।

महेन्द्र साहू"खलारीवाला"
गुण्डरदेही बालोद छ ग

परशुराम ने उठाई थी हरिद्वार से पहली कांवड़



मान्यताएं बताती हैं कि हरकी पैड़ी से पहली कांवड़ त्रेतायुग में भगवान परशुराम ने स्वयं उठाई थी। यद्यपि तब कांवड़ यात्रा का आज जैसा रूप नहीं था। शिवलिंगों की स्थापना के लिए परशुराम ने गंगा से पत्थर निकाले तो पाषाण करुण क्रंदन करने लगे। वे कहने लगे कि उन्हें मां गंगा से अलग न करो। तब परशुराम ने वचन दिया कि पत्थरों को शिवलिंग के रूप में जहां जहां स्थापित किया जाएगा, श्रावण मास में शिवभक्त हरकी पैड़ी के जल से वहां वहां जलाभिषेक करेंगे।

एक मान्यता यह भी हैं कि दुष्ट राजाओं के दलन के बाद परशुराम ने यज्ञ करने का निर्णय लिया। इस यज्ञ का आयोजन बागपत के पास वर्तमान पुरा महादेव मंदिर परिसर में किया गया। हरिद्वार की हरकी पैड़ी से निकाले शिवलिंग से पहला मंदिर पुरा महादेव के रूप में स्थापित हुआ। ज्ञानवर्धक सूत्र बताते हैं कि पुरा के बाद परशुराम के शिष्यों ने देश के सैकड़ों नगरों और गांवों में शिव मंदिर बनाए। गंगा तट पर दिए गए वचन का पालन कराने के लिए सावन में जगह–जगह श्रद्धालु गंगाजल लेने कांवड़ धारियों के रूप में आते हैं। हरिद्वार के बाद अब काशी और प्रयाग आदि तीर्थों से भी जल ले जाया जाने लगा है। कांवड़ यात्रा को लेकर कुछ अन्य पुरा कथाएं भी पुराणों में उपलब्ध हैं। इनके अनुसार समुद्र मंथन के बाद जब समुद्र से निकला विष भगवान शंकर ने ग्रहण किया तब विष की ज्वाला से उनका शरीर जलने लगा। विष को गले में रोकने से उनका कंठ नीला पड़ गया और वे नीलकंठ कहलाए। विष से उत्पन्न ज्वाला को शांत करने के लिए रावण ने पहला जलाभिषेक सावन में किया। यही कांवड़ यात्रा का शुभारंभ था। इसी प्रकार बाबाधाम में राम के जलाभिषेक का वर्णन भी शास्त्रों में उपलब्ध है। कहा जाता है कि मातृ पितृ भक्त श्रवण कुमार ने नेत्रहीन माता पिता को कांवड़ बनाकर उन्हें दोनों पलड़ों में बिठाया। तीर्थाटन करते हुए वह श्रावण में हरिद्वार आए और माता पिता को ब्रह्मकुंड पर स्नान कराया। उसी को बाद में कांवड़ यात्रा का स्वरूप प्राप्त हुआ। कांवड़ यात्रा वस्तुतः शिव मंदिरों तक गंगाजल की सबसे बड़ी पैदल यात्राओं से जुड़ी हुई है। एक बार फिर लाखों कांवड़िए गंगा को यात्रा कराने निकल पड़े हैं।

अच्छा गुरु आजकल कम ही नज़र आता है

गुरु यदि अच्छा हो तो सब कुछ मिल जाता है
लेकिन अच्छा गुरु आजकल कम ही नज़र आता है
बाबा ढोंगी पाखंडियों ने कर दिया गुरु को बदनाम
अय्याशी पाखंड फरेब करना रह गया जिनका काम
लोग भी कम दोषी नहीं अंधभक्ति दिखाते हैं
भेड़ चाल में ऐरे गैरे नत्थु खैरे के भक्त बन जाते हैं
गुरु का दर्जा गोविंद से भी बड़ा माना जाता है
गुरु ही है जो अपने शिष्य को गोविंद से मिलाता है
आषाढ़ मास की पूर्णिमा को यह दिवस मनाते हैं
गुरुओं को इस दिन श्रद्धा से सब शीश नवाते हैं
वेदों का ज्ञान दिया ब्यास ने ऐसा शास्त्र बताते है
इसीलिए तो वेद ब्यास पहले गुरु कहलाते हैं
असली गुरु भक्त को अपने ज्ञान से राह दिखाता है
उस ज्ञान से भक्त भवसागर पार कर जाता है
ऐसे गुरु कहाँ मिलते निर्लोभी संतोषी और हों निष्काम
गुरु अगर ज्ञानी है तो उस्के चरणों में सारे धाम
गुरु अगर लोभी है तो बेकार है फिर उसका ज्ञान
मन में उसके चाहत होगी क्या करेगा वो कल्याण
माता पिता और गुरु जगत में इनसे कोई नहीं बड़े
यदि मुसीबत आ जाये तो रहते यह तीनों ही खड़े
माता पिता और गुरु का जो करते नहीं सम्मान
शक्ति है कितनी तीनों में नहीं है उनको ज्ञान

रवींद्र कुमार शर्मा
घुमारवीं
जिला बिलासपुर हि प्र

गुरु की शिक्षाओं से मार्गदर्शन प्राप्त करते हुए अन्त:करण को शुद्ध रखें

ग्रंथों में वर्णित मानव कल्याणकारी शिक्षा पर संक्षिप्त नोट तैयार करें एवं उन्हें आधुनिक सामाजिक, राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय परिस्थितियों के परिपेक्ष्य में समझने का प्रयास करें। दैनिक कार्य–कलापों का, आत्मनिरीक्षण करते हुए, शिक्षाओं को जीवन में धारण करने का संकल्प करें। आशा है, गुरु–पूर्णिमा उत्सव बच्चों एवं युवाओं को भारतीय संस्कृति की पहचान करायेगा एवं समाज में नयी चेतना का संचार करेगा।

श्रीगुरुगीता के अनुसार

गुकारश्चान्धकारो हि रुकारस्तेज उच्यते।

अज्ञानग्रासकंब्रह्म गुरुरेव न शंसयः ॥

गुकारश्चान्धकारस्तु रुकारस्तन्निरोधकृत्।

अन्धकार विनाशित्वात् गुरुरित्यभिधीयते ॥

अर्थात् 'गु' (अज्ञानरूपी) अन्धकार है एवं 'रु' (ज्ञानरूपी) प्रकाश है। इस प्रकार निःसन्देह समाज से अज्ञान रूपी अंधकार दूर कर ज्ञान रूपी प्रकाश का विस्तार करने वाला गुरु ही ब्रह्म है। अनेक ग्रंथ गुरु के महत्व का विस्तार से वर्णन करते हैं, जिसके आधार पर कुछ अत्यन्त लोकप्रिय अवधारणाएं इस प्रकार हैं–

'गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः ।

गुरुः साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥

अर्थात् गुरु परमपिता ब्रह्मा (सृष्टिकर्ता) के समकक्ष हैं क्योंकि वह ज्ञान उत्पन्न करते हैं, वह भगवान विष्णु (पालनकर्ता) के समकक्ष है क्योंकि वह ज्ञान और विचारों को सही दिशा प्रदान करते हैं, वह भगवान शिव (संहारकर्ता) के समकक्ष है क्योंकि वह अज्ञान, मनो. विकार और कुत्सित विचारों को नष्ट कर सत्मार्ग का बोध कराते हैं। हम गुरु के रूप में सर्वोच्च ईश्वर को प्रणाम करते हैं। 'सब धरती कागद करूं, लेखनी सब बनराय।

सात समुद्रकी मसि करूं,

गुरु गुण लिखा न जाय ॥

अर्थात् यदि सारी धरती को कागज, सारे वनोंकी लकड़ी को कलम और सातों समुद्र के जल को स्याही बना दिया जाय तो भी गुरु के अनन्त गुणों का वर्णन नहीं किया जा सकता।

'गुरु बिनु भवनिधि तरइ न कोई।

जौ बिरंचि शंकर सम होई ॥

अर्थात् मनुष्य कितना ही महान शैक्षिक उपाधिधारी, क्षमतावान, ऊर्जावान, शक्तिशाली क्यों न हो, गुरु के मार्गदर्शन के बिना यथार्थ ज्ञान के अभाव में जीवन भर संशय–भ्रम–उलझन में पड़ा रहता है और यथोचित निर्णय न ले पाने एवं क्षमताका समुचित उपयोग न कर पानेसे उसका कल्याण नहीं होता। यह आवश्यक नहीं कि कोई भगवा–वेष धारी या औपचारिक शिक्षा प्रदान करनेवाला शिक्षक को ही गुरु माना जाये और उसके समीप पहुंचकर ही ज्ञान प्राप्त किया जाय। मन में सच्ची लगन एवं श्रद्धा हो तो गुरु को किसी भी रूप में कहीं भी पाया जा सकता है। प्रायः माता–पिता और शिक्षक, गुरु का उत्तरदायित्व निभाते हुए अपने ज्ञान, विवेक, अनुभव एवं परिस्थितियों के आधारपर मार्गदर्शन करते हैं। गुरु गोविन्द सिंह ने सन्तों की वाणीसे परिपूर्ण पवित्र ग्रंथ को गुरु की संज्ञा दी। निश्चय ही उत्तम साहित्य पाठक का मार्गदर्शन कर गुरु की महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। आधुनिक युग में दूरदर्शन एवं सूचना प्रौद्योगिकी के डिजिटल माध्यमोंसे भी विभिन्न विषयोंमें शिक्षा प्राप्त की जा सकती है। विभिन्न विद्वान भी इन्हीं माध्यमोंसे निरन्तर ज्ञान में वृद्धि करते रहते हैं। एक जिज्ञासु एवं जागरूक नागरिक किसी भी साधन से उचित मार्गदर्शन प्राप्त कर सकता है।

महर्षि वेदव्यास जीने चारों वेद संपादित किये। उन्होंने अठ्ठारह पुराण और कुछ अन्य पवित्र ग्रंथ भी लिखे। यह सभी ग्रंथ भारतीय संस्कृतिके आधार हैं एवं मानवको देश–कालके अनुसार उचित–अनुचित, शुभ–अशुभ एवं धर्म–अधर्मका बोध कराते हुए कर्तव्य पथको आलोकित करते हैं।

बढ़ती जनसंख्या, बदलती अर्थव्यवस्था और औद्योगीकरण के आधुनिक युग में, औपचारिक शिक्षा का स्वरूप पूर्णरूपेण बदल चुका है। आज शिक्षाका मुख्य उद्देश्य इसे रोजगारपरक बनाकर बेरोजगारी दूर करना और युवाओं को अधिक से अधिक धन अर्जित करने योग्य बनाना है। साथ ही विज्ञान और तकनीकी विकास के नये–नये आयाम स्थापित कर देश को विकसित देशों की प्रतिस्पर्धा में रखना भी एक महत्वपूर्ण उद्देश्य है। शिक्षाके उद्देश्य के अनुरूप पाठ्यक्रम भी बदल चुका हैं। नैतिक शिक्षा का महत्व समाप्तप्राय है। परिणामस्वरूप समाज में भ्रष्टाचरण बढ़ रहा है। असुरक्षा एवं हताशा बढ़ती जा रही है। समाज में मानवीय गुणों– विनम्रता, कर्तव्य–परायणता, सहनशीलता, श्रमशीलता, संवेदनशीलता, कृतज्ञता, सत्यनिष्ठा आदिकी कमी एवं मनोविकारों–काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, ईर्ष्या, स्वार्थपरता, अति–महत्वाकांक्षा आदि की निरन्तर वृद्धि हो रही है।

अत्यंत दुखद यह है कि समाज में, विशेषकर (तथाकथित) बुद्धिजीवी वर्ग में शुभ–अशुभ, अच्छाई–बुराई, उचित–अनुचित, गुण–दोष एवं धर्म–अधर्म की पहचान लगभग मिट चुकी है। यहांतक कि लोग राष्ट्रविरोधी तत्वों का खुल्लमखुल्ला समर्थन करने में भी नहीं हिचकते और इसे लोकतांत्रिक अधिकार मानते हैं।

समय के साथ मानवीय गुणों में निरन्तर कमी एवं मनोविकारों में वृद्धि एक सामान्य मानवीय प्रवृत्ति है, इसे विचार प्रदूषण भी कहा जा सकता है। इसे वैज्ञानिक, मनोवैज्ञानिक एवं शास्त्रीय सिद्धान्तों के आधार पर समझा जा सकता है। यदि विचार प्रदूषण निर्बाध रूप से बढ़ता रहे तो समाज में आपराधिक प्रवृत्ति का बढ़ना अवश्यम्भावी है। समुचित सामाजिक विकास के लिए समाज में आपराधिक प्रवृत्ति को नियंत्रित रखने के लिए विचार प्रदूषण को नियंत्रित रखना आवश्यक है। इसके लिए समय–समय पर एक योग्य गुरु की शिक्षाओं से मार्गदर्शन प्राप्त करते हुए अन्तःकरण को शुद्ध रखना अनिवार्य है।

देश में अनेक सन्त–महापुरुष हुए है, जिन्होंने अपने विवेक एवं अनुभव के आधार पर धर्म का अनुसरण करते हुए जीवनयापन करने के सिद्धान्त प्रतिपादित किये हैं। इस सन्दर्भ में विभिन्न ग्रन्थों के रूप में महर्षि वेदव्यास जी का योगदान मानव समाज एवं देश के लिए अनुपम भेंट है।

मानव जीवन में त्योहारों एवं अनुष्ठानों के आयोजन का विशेष महत्व है। इनसे समाज में नयी ऊर्जा का संचार होता है।

गुरु पूर्णिमा के अवसरपर गुरु–पूजा का आयोजन कर, ग्रंथों में वर्णित शिक्षाओं से प्रेरणा लेते हुए हम अपने अन्तःकरण को ऊर्जावान बनाकर विचार प्रदूषण को नियंत्रित कर, सकारात्मकता का संचार कर सकते हैं।



लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला मंगोलिया के दौरे पर हैं। तीन दिवसीय दौरे पर गत दिनों मंगोलिया पहुंचने पर का स्वागत शानदार पारंपरिक तरीके स कुलानबटोर में सदस्यों ने किया। लोकसभा अध्यक्ष ने दोनों देशों के बीच संबंधों को और अधिक मजबूत करने पर बल दिया। सूच्य है कि लोकसभा अध्यक्ष भारतीय संसदीय दल का नेतृत्व कर रहे हैं।



94 की उम्र में अद्भुत भक्ति
80 लाख बार लिख चुकी हैं राम नाम

पुराणों में कहा गया है कि कलियुग में यदि कोई रामनाम का जप करे तो उसका बेड़ापार हो जाएगा। लोग इसी उम्मीद में मंदिरों के दर्शन को जाते हैं, भगवान की एक झलक पाने के लिए घंटों लाइन में लगे रहते हैं। कई भक्त ऐसे भी मिल जाएंगे जो वर्षों से तप कर रहे हैं। कोई एक पांव पर खड़ा है तो कोई वर्षों से सोया ही नहीं।

किसी को भगवान श्रीराम का इंतजार है तो कोई श्रीकृष्ण के दर्शनों को आतुर। मगर 94 साल की मंथा सुब्बालक्ष्मी की भक्ति अद्भुत और अनोखी है। रामनाम की भक्ति में उन्होंने कुछ ऐसा कर दिया है कि हर जगह प्रशंसा हो रही है। उड़ीसा में एक विद्वान परिवार में पैदा हुई मंथा सुब्बालक्ष्मी 80 लाख बार राम नाम लिख चुकी हैं। और उन्हें उम्मीद है कि जल्द ही वह एक करोड़ से अधिक बार राम नाम का लेखन पूरा कर देंगी। बचपन में उनके अंदर जो इच्छा जगी तब से वह लगातार यह काम कर रही हैं। आप जानकर हैरान होंगे कि लोग सिर्फ उनकी यह भक्ति देखने के लिए इकट्ठा होते हैं। आशीर्वाद लेते हैं।

अमृत काल में सहकारिता क्षेत्र की भूमिका महत्वपूर्ण : मोदी

नई दिल्ली। अमृत काल में देश के गांव और किसानों के क्षमता बढ़ाने के लिए सहकारिता क्षेत्र की भूमिका अधिक बढ़ने वाली है। यह बात प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 17वे भारतीय सहकारिता सम्मेलन के उद्घाटन समारोह को संबोधित करते हुए कहीं।

उन्होंने कहा कि सरकार किसानों के कल्याण और कृषि के हर क्षेत्र को विकसित और आत्मनिर्भर बनाने के प्रयास कर रही है। देश में सहकारिता क्षेत्र को मजबूत करने के लिए सरकार ने कई कदम उठाए हैं।

उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार कृषि और किसानों के कल्याण के लिए हर वर्ष 6.50 लाख करोड़ रुपए से अधिक खर्च कर रही है। छोटे और मझोले किसानों को सरकारी योजनाओं से बहुत लाभ हुआ है। भारतीय जनता पार्टी की सरकार में किसानों को विभिन्न योजनाओं के जरिए हर वर्ष 50 हजार की गारंटी दी गई है।

उन्होंने कहा कि यह मोदी की गारंटी है। किसानों के लिए कल्याणकारी योजनाओं का उल्लेख करते हुए प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि करुणा छोटे किसानों को प्रधानमंत्री किसान योजना का लाभ मिल रहा है इस योजना के अंतर्गत किसानों के बैंक खातों में दो लाख 50हजार करोड़ रुपए का प्रत्यक्ष अंतरण किया गया है। उन्होंने अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए कहा कि संप्रग सरकार के 5 वर्षों के दौरान कृषि पर 90 गुना अधिक राशि खर्च की गई है। उन्होंने कहा कि आज किसानों को 270 रुपये प्रति बोरी के हिसाब से यूरिया मिल रहा है जो बांग्लादेश पाकिस्तान चीन और अमेरिका के मुकाबले बहुत कम है। सरकार ने 9 वर्षों में उर्वरकों पर दस लाख करोड़ रुपए से अधिक की सब्सडी दी है और अनाज के न्यूनतम समर्थन मूल्य पर 15लाख करोड़ खर्च किए हैं।

दिन की लंबाई के निर्धारण में चंद्रमा की भूमिका



हमारा एक दिन 24 घंटे का होता है उन्हीं 24 घंटों के अनुसार हम अपनी दैनिक दिनचर्या की योजना बनाते हैं यहां तक कि हमारे शरीर की घड़ी भी पृथ्वी की इस घड़ी के अनुसार ढल चुकी है लेकिन हमेशा ऐसा नहीं था। अरबों साल पहले दिन की लंबाई इतनी लंबी नहीं हुआ करती थी। चीन के वैज्ञानिकों ने पृथ्वी के दिन की लंबाई और इसके इतिहास का एक अध्ययन किया और इस परिणाम पर नई जानकारी प्रस्तुत करते हुए यह कहा कि पृथ्वी के 1 दिन की लंबाई समय के साथ ही बढ़ती रही एक गलत धारणा है वही दिन की लंबाई के निर्धारण में चंद्रमा की भूमिका भी है।

चंद्रमा का कारक– चाइनीज एकेडमी ऑफ साइंसेज के इंस्टीट्यूट आफ जियोलॉजी एंड जियोफिजिक्स के भूभौतिकविद रास मिसेल की अगुआई में किये गये विशेष अध्ययन में जब पृथ्वी के दिन ज्यादा छोटे हुआ करते थे। अध्ययन में यह भी पता चला है कि पृथ्वी की घूर्णन गति को चंद्रमा ने प्रभावित किया है। समय के साथ चंद्रमा ने पृथ्वी की घूर्णन ऊर्जा को चुरा लिया था। इससे उसकी खुद की परिक्रमा की गच्छा बड़ी हो गई यानी वह पृथ्वी से दूर चला गया था जहां अधिकांशतः पृथ्वी के घूर्णन गति के प्रतिमान यह अनुमान लगाते हैं कि समय के साथ पीछे जाने पर पृथ्वी के दिन की लंबाई छोटी होती जाती है वही इस अध्ययन के नतीजे कुछ और हैं। हर महीने ज्वार भाटा से बनने वाले अवसाद तुम की गिनती करते थे जिससे पता चल सके कि पुरातन समय में कितने घंटों का होता था कठिन पद्धति होने के कारण इसकी सीमा रिकॉर्ड में कमी और उनसे निष्कर्ष से निकले विवाद भी बताए जाते हैं। वही एक दूसरा तरीका जिसे साइक्लो स्ट्रेटि ग्राफी कहते हैं इसमें मददगार साबित हुआ। भूगर्भीय पद्धति में अवसादी परतो की रिद्म के जरिए खगोलीय मिलन को बेचकर को पहचान की जाती है जिससे पृथ्वी के घूर्णन और कक्षा का जलवायु पर प्रभाव समझा जाता है इस चक्र का संबंध पृथ्वी के अक्ष का झुकाव और उसकी जगमगाहट से है इससे पुरानी पृथ्वी के तेज घूर्णन की जानकारी मिलती है। शोधकर्ताओं का पुरातनघूर्णन या पेलियोरोटेशन के सिद्धांत के परीक्षण का अवसर दिया।

इस सिद्धांत माना जाता है कि ऐसा आया था जब कुछ समय के लिए पृथ्वी के दिन की लंबाई एक सी ही बनी रही थी। इसके पीछे की वजह जानने का है जब प्रयास किया तो शोधकर्ताओं को चंद्रमा और सूर्य दोनों के ज्वरीय बल के प्रभाव का पता चला। पृथ्वी चंद्रमा के अलावा सूर्य के ज्वरीय बल अनुभव करती है जो कि अभी चंद्रमा के ज्वरीय बल की तुलना में कमजोर होता है। लेकिन इसका प्रभाव तब ज्यादा रहा होगा जब पृथ्वी ज्यादा तेजी से घूर्णन करती थी और तब चंद्रमा का गुरुत्वाकर्षण बल कमजोर था। चंद्रमा का बल पृथ्वी के घूर्णन को कमजोर करता है वही सूर्य का बल उसे तेज करता है। ऐसे में एक समय ऐसा जरूर आया होगा जब दोनों बल बराबर हो गए होंगे। इसी दौरान ही पृथ्वी के दिन की लंबाई बदलना रुक गया होगा और कुछ समय तक एक समान बनी रही होगी। शोधार्थियों ने यह पाया कि इस दौरान की लंबाई 19 घंटे की थी और यह स्थिति 2 से 1 अरब साल पहले के बीच यानी एक अरब साल तक बनी रही थी।

तकनीक भविष्य की ओर इशारा...उड़ने वाली कार

उड़ने वाली कार भविष्य में सच तो होंगी, लेकिन यह भविष्य कितनी जल्दी आएगा इस पर तेजी से काम चल रहा है। दुनिया की कई कंपनियों ने उड़ने वाली कार या यात्री ड्रोन बनाने में सफलता भी हासिल कर ली है, लेकिन दुनिया के बड़े देश अभी इनके लिए तैयार नहीं हैं क्योंकि इनके लिए बहुत सारे नियामक और नियंत्रण व्यवस्थाएं बनानी होंगी। तकनीक भविष्य की ओर इशारा करती है और असंभव लगने वाली बातों को संभव बनाती है। उड़ने वाली कारें ऐसी एक कल्पना है जिस पर बहुत ज्यादा काम हो रहा है और सफलता भी मिल रही है। उड़ने वाली टैक्सी या ड्रोन से लोग सड़कों की जगह हवा में यात्रा कर सकते हैं। बड़ी ऑटोमोबाइल और एरोस्पेस कंपनीयां तो नए मॉडल पेश कर रही हैं. लेकिन क्या हमारे शहर इनके लिए तैयार हैं भी या नहीं यह एक सवाल है। बोइंग, हुडेई, एयरबस, टोयोटा जैसी कंपनियां इस तरह के वाहनों का विकास कर रही हैं जो फ्लाइंग कार, फ्लाइंग टैक्सी, पैसेंडर ड्रोन के रूप में सेवाएं दे सकेंगे। इतना ही नहीं इस तरह की कंपनियां नए युग के ऐसे वाहन को लॉन्च करने के लिए भी तैयार हैं। लेकिन यूरोप और अमेरिका अभी इसके लिए तैयारी कर रहे हैं। वे इनके लिए एयर टैक्सी वाले नए नियामक तैयार कर रहे हैं। ऑस्ट्रेलिया भी इसी दिशा में काम कर रहा है।

यह बहुत ही रोमांचक और उत्साहित करने वाली बात लगती है। लेकिन यहां कई तरह की वैज्ञानिक और सुरक्षा चुनौतियां हैं जिन्हें पार पाने की जरूरत है। इनमें से एक परिघटना है इन वाहनों की अस्थिर करने वाली



तेज हवा से निपटना। इन वाहनों में आंधी तूफान वाली तेज हवा से निपटने वाली क्षमता जरूर होना चाहिए।

ऑस्ट्रेलिया की आरएमआईटी यूनिवर्सिटी के एरोस्पेस इंजीनियर डॉक्टर अब्दुलगनी मोहम्मद और उनकी टीम एक दशक से इस विषय पर अध्ययन कर रहे हैं और हाल ही में उन्होंने अपनी पड़ताल के नतीजे प्रकाशित करने जा रहे हैं।

मोहम्मद कहना है कि निचली ऊंचाई पर उड़ान भरने वाले विमानों में हवा के झोंके जोखिम पैदा कर देते है क्योंकि वे बहुत ही कम गति से उड़ा भरते और उतरते हैं। ऐसे झोंके एक ही पल में बहुत बड़ी सुरक्षा चुनौती खड़ी कर सकते है। इसका मतलब यही हुआ कि एयर टैक्सी या ड्रोन जो शहरों में काम करेंगे उन्हें अंतरिक्ष या एयरपोर्ट पर उड़ानों की तुलना में उड़ान भरने या उतरने के लिए और ज्यादा ताकत की जरूरत होगी। उन्हें ऐसी शक्तिशाली मोटर की जरूरत होगी जो तीजे से प्रोपेलर का धक्का बदल सकें जिसके लिए और ज्यादा ऊर्जा की जरूरत होगी। इसके साथ ही नियामक बनाने वालों को मौसम की चुनौतियों का भी ख्याल रखना होगा और इसमें खतरनाक और जोखिम भरे क्षेत्रों की पहचान करना बहुत जरूरी होगा।

प्रिय पाठकों,

इस अंक में प्रकाशित सभी अग्रलेख, कथा–लघु कथा, कविता, व्यंग्य, विचार विमर्श लेखकों एवं विचारकों की अपनी कल्पना प्रसूति हैं। त्रुटियां मानवीय स्वभाव का अंग हैं जिनकी ओर ध्यान आकृष्ट करना एक जागरूक पाठक की विशेषता होती है।

अतः आप सभी सुधी विज्ञजनों, से ऐसी अपेक्षा की जाती है कि आप अपने पत्रों के माध्यम से इस अंक में प्रकाशित त्रुटियों की ओर ध्यान आकृष्ट भी समय–समय पर कराते रहें ताकि उन त्रुटियों की पुनरावृत्ति से बचा जा सके।

विवाद की स्थिति में न्यायालय, गोरखपुर का निर्णय अंतिम व मान्य होगा।

–व्यवस्थापक

स्वामी/मुद्रक/प्रकाशक पंकजधर द्विवेदी द्वारा जनप्रकाशन प्रेस, निकट रीड्स साहब का धर्मशाला से मुद्रित एवं 45 बादशाहबाग, जगन्नाथपुर, गोरखपुर से प्रकाशित। सम्पादक–पंकज धर द्विवेदी सम्पर्क सूत्र– e-mail- ghoonghatkibagawat37@gmail.com